CBSE Class 12 Hindi Core Question Paper 2004 with Solution PDF-Set 2/2/1

Question Paper with Solutions

Conducted by the Central Board of Secondary Education (CBSE)

निर्धारित समय: 3 Hours **अधिकतम अंक: 100**

सामान्य निर्देश

(i) इस प्रश्न-पत्र में कुल 14 प्रश्न हैं। सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।
(ii) प्रश्न 6, 9, 13 में आंतरिक विकल्प दिया गया है; ऐसे प्रश्नों में केवल एक विकल्प का उत्तर दीजिए।
(iii) प्रश्नों में दिए गए निर्देशों का पालन करते हुए उत्तर लिखिए।
(iv) प्रत्येक प्रश्न के अंक उसके सामने दर्शाए गए हैं।

1(क). निम्नलिखित काव्यांशों में से किन्हीं दो की सप्रसंग व्याख्या कीजिए :

कबहुँक हौं यहि रहनि रहौंगो ।
श्रीरघुनाथ-कृपालु-कृपा तें संत-सुभाव गहौंगो ।।
जथालाभ संतोष सदा, काहू सों कछु न चहौंगो ।
परहित-निरत निरंतर, मन क्रम बचन नेम निबहौंगो ।।
तरुष बचन अति दुसह स्रवन सुनि तेहि पावक न दहौंगो ।
विगतमान, सम सीतल मन, पर गुन, नहिं दोष कहौंगो ।।

[7 अंक]

हल:

अवधारणा:

- सप्रसंग व्याख्या में कवि और भावभूमि का परिचय देकर पद की प्रत्येक प्रमुख बात का अर्थ स्पष्ट किया जाता है।
- इस पद में रामभक्ति का व्यावहारिक रूप संतोष, परोपकार, सहनशीलता, विनम्रता और गुणग्राहकता है।

चरण 1: संदर्भ और प्रसंग स्पष्ट करें प्रस्तुत पद गोस्वामी तुलसीदास की विनय-भावना का परिचायक है। इसमें कवि श्रीराम की कृपा से संतों जैसा निर्मल आचरण अपनाने की अभिलाषा व्यक्त करते हैं। वे अपने वर्तमान आचरण पर गर्व नहीं करते, बल्कि विनम्रतापूर्वक पूछते हैं कि वह समय कब आएगा, जब उनका जीवन इन आदर्शों के अनुरूप होगा। इस प्रकार पद में भक्त की आत्मसुधार की आकांक्षा और प्रभु की करुणा पर विश्वास दोनों व्यक्त हुए हैं।

चरण 2: संतोष और परहित की अभिलाषा समझाएँ कवि कहते हैं कि कृपालु श्रीरघुनाथ की कृपा से वे संतों का स्वभाव ग्रहण करना चाहते हैं। उन्हें जो कुछ सहज रूप से प्राप्त हो, उसी में सदा संतुष्ट रहें और किसी से कुछ पाने की अपेक्षा न करें। यहाँ संतोष का आशय लोभ और अनावश्यक याचना से मुक्त रहना है। वे निरंतर दूसरों के कल्याण में लगे रहना चाहते हैं। यह परोपकार केवल शब्दों तक सीमित न हो; मन से शुभ चिंतन, कर्म से सहायता और वाणी से हितकारी व्यवहार हो। मन, कर्म और वचन की एकता से ही परहित का नियम निभाया जा सकता है।

चरण 3: सहनशीलता और विनम्रता का अर्थ खोलें दूसरों की अत्यंत कठोर और असहनीय बातें कानों से सुनकर भी कवि क्रोध की आग में नहीं जलना चाहते। कटु वाणी को अग्नि के रूप में प्रस्तुत करने से उसके मानसिक प्रभाव का बोध होता है। संत-स्वभाव वाला व्यक्ति अपमान का उत्तर द्वेष से देने के बजाय अपने मन की शांति बनाए रखता है। कवि अहंकार से रहित, समभाव वाला और शीतल मन चाहते हैं। वे दूसरों के गुणों की चर्चा करना चाहते हैं, उनके दोषों का प्रचार नहीं। गुणों को अपनाने की दृष्टि मनुष्य को उदार बनाती है, जबकि निंदा उसे दूसरों के प्रति कटु बनाती है।

चरण 4: काव्य-सौंदर्य पहचानें पद की भाषा ब्रजभाषा है। 'हौं', 'रहौंगो', 'गहौंगो' और 'काहू सों' जैसे रूप इसकी पहचान हैं। प्रार्थना और आत्मनिवेदन से भक्तिभाव प्रकट हुआ है। 'संत-सुभाव', 'संतोष सदा' तथा 'मन क्रम बचन' में ध्वनियों की आवृत्ति लय और प्रभाव बढ़ाती है। कटु वचन की अग्नि तथा शीतल मन का विरोधी बिंब क्रोध और शांति का अंतर स्पष्ट करता है। पद की गेयता और सरल नैतिक कथन इसे स्मरणीय बनाते हैं।

चरण 5: निष्कर्ष तुलसीदास के लिए सच्ची भक्ति का फल निर्मल आचरण है। संतोष, निष्काम परोपकार, कटु वचनों के प्रति सहिष्णुता, अहंकार-त्याग और परगुण-दर्शन से संत-जीवन की पहचान बनती है।

त्वरित सुझाव: व्याख्या में 'जथालाभ', 'मन क्रम बचन', 'पावक' और 'विगतमान' का अर्थ क्रम से खोलें; इससे संतोष, परहित, सहनशीलता और विनम्रता की पूरी भाव-शृंखला सामने आएगी।

1(ख). निम्नलिखित काव्यांशों में से किन्हीं दो की सप्रसंग व्याख्या कीजिए :

हँसा ज़ोर से जब, तब दुनिया
बोली — इसका पेट भरा है ।
और फूट कर रोया जब,
तब बोली — नाटक है, नखरा है ।
जब गुमसुम रह गया, लगाई
तब उसने तोहमत घमण्ड की
कभी नहीं वह समझी इसके
भीतर कितना दर्द भरा है ।

[7 अंक]

हल:

अवधारणा:

- काव्यांश की व्याख्या में हँसी, रुदन और मौन के प्रति समाज की प्रतिक्रियाओं को अलग-अलग समझना आवश्यक है।
- कविता का केंद्रीय भाव व्यक्ति की भीतरी पीड़ा और उसके बाहरी व्यवहार को लेकर समाज की गलत धारणाओं का विरोध है।

चरण 1: संदर्भ और प्रसंग बताएं प्रस्तुत पंक्तियाँ सर्वेश्वरदयाल सक्सेना की कविता 'हँसा ज़ोर से जब' से ली गई हैं। इनमें कवि ने उस सामाजिक संवेदनहीनता पर व्यंग्य किया है, जिसमें लोग किसी मनुष्य के बाहरी व्यवहार के आधार पर तुरंत निर्णय कर लेते हैं, लेकिन उसके अंतर्मन की वेदना समझने का प्रयास नहीं करते। यहाँ पीड़ित व्यक्ति की तीन अवस्थाओं और उन पर दुनिया की प्रतिक्रिया के माध्यम से उसकी असहायता दिखाई गई है।

चरण 2: हँसने और रोने पर लगी तोहमत समझाएँ जब वह व्यक्ति जोर से हँसता है तो दुनिया कहती है कि उसका पेट भरा हुआ है। 'पेट भरा' होने का आशय यहाँ केवल भोजन कर लेना नहीं, बल्कि सुख-सुविधाओं से संपन्न और चिंता से मुक्त होना है। समाज मान लेता है कि उसकी हँसी का कारण उसका पूर्ण सुखी होना है। वह यह संभावना नहीं समझता कि कोई मनुष्य अपना दुख छिपाने के लिए भी हँस सकता है। जब वही व्यक्ति अपनी वेदना के कारण फूटकर रोता है, तब लोग उसके आँसुओं को भी सच्चा नहीं मानते। वे उसे नाटक और नखरा बताकर उसकी पीड़ा का उपहास करते हैं। इस तरह हँसी और रुदन, दोनों का गलत अर्थ निकाला जाता है।

चरण 3: मौन और भीतरी दर्द का संबंध स्पष्ट करें जब अपनी भावनाओं को बार-बार गलत समझे जाने पर व्यक्ति गुमसुम रह जाता है, तब भी संसार उसे चैन से नहीं रहने देता। उसकी चुप्पी को आत्मगर्व समझकर उस पर घमंड की तोहमत लगा देता है। 'तोहमत' का अर्थ आरोप है। उसकी चुप्पी के पीछे छिपी व्यथा को समझने के बजाय समाज एक और दोष उस पर मढ़ देता है। अंतिम पंक्तियाँ इस सारे व्यवहार का मूल कारण स्पष्ट करती हैं: दुनिया ने कभी यह जानने की कोशिश ही नहीं की कि उसके भीतर कितना दर्द है। कविता व्यक्ति के भावों को धैर्य और सहानुभूति से समझने की आवश्यकता सामने लाती है।

चरण 4: भाषा और काव्यगत प्रभाव बताएं कविता की भाषा सरल, बोलचाल की खड़ी बोली है। 'पेट भरा', 'फूट कर रोया', 'गुमसुम', 'तोहमत' और 'नखरा' जैसे शब्द अनुभव को सहज बनाते हैं। हँसना, रोना और चुप रहना क्रम से रखे जाने के कारण व्यक्ति की हर अवस्था में समाज के दोषदर्शन की प्रवृत्ति उजागर होती है। 'जब' और 'तब' का प्रयोग घटनाओं तथा प्रतिक्रियाओं को जोड़ता है। दुनिया को बोलने और आरोप लगाने वाली सत्ता की तरह प्रस्तुत करने में मानवीकरण है। कविता में करुणा के साथ तीखा सामाजिक व्यंग्य निहित है।

चरण 5: निष्कर्ष काव्यांश बताता है कि बाहरी व्यवहार देखकर किसी के सुख-दुख का अंतिम निर्णय नहीं करना चाहिए। संवेदनहीन समाज हँसी, आँसू और मौन सभी को गलत समझकर पीड़ित व्यक्ति का अकेलापन बढ़ा देता है।

त्वरित सुझाव: उत्तर में तीन जोड़ स्पष्ट लिखें: हँसी को सुख, रोने को अभिनय और मौन को घमंड मानना। फिर अंतिम दो पंक्तियों के आधार पर इन धारणाओं की संवेदनहीनता समझाएँ।

1(ग). निम्नलिखित काव्यांशों में से किन्हीं दो की सप्रसंग व्याख्या कीजिए :

मैं थी उज्ज्वल स्फूर्ति, पूर्ति
थी प्यारी अभिलाषाओं की
मैं ही तो थी मूर्ति तुम्हारी
बड़ी-बड़ी आशाओं की ।
आओ चलो, कहाँ जाओगे
मुझे अकेली छोड़, सखे !
बँधे हुए हो हृदय-पाश में
नहीं सकोगे तोड़, सखे !

[7 अंक]

हल:

अवधारणा:

- काव्यांश में वक्त्री अपने प्रिय के जीवन में अपनी प्रेरक भूमिका और दोनों के गहरे भावनात्मक संबंध को व्यक्त करती है।
- 'स्फूर्ति', 'अभिलाषाओं की पूर्ति', 'आशाओं की मूर्ति' और 'हृदय-पाश' प्रेम की शक्ति को स्पष्ट करने वाले प्रमुख पद हैं।

चरण 1: संदर्भ और प्रसंग स्थापित करें प्रस्तुत काव्यांश सुभद्रा कुमारी चौहान की कविता 'स्मृतियाँ' से लिया गया है। इसमें प्रेममयी वक्त्री अपने प्रिय को संबोधित करते हुए उसके जीवन में अपने महत्व का स्मरण कराती है। उसे अपने प्रेम की गहराई और स्थायित्व पर विश्वास है। वह बताती है कि जो संबंध हृदय में रच-बस गया हो, उसे केवल दूर चले जाने से समाप्त नहीं किया जा सकता। इस प्रसंग में स्मृति, आत्मीयता और बिछुड़ने की आशंका के साथ प्रेम का दृढ़ विश्वास व्यक्त हुआ है।

चरण 2: प्रेरणा और अभिलाषाओं की पूर्ति का अर्थ बताएं वक्त्री कहती है कि वह प्रिय के जीवन की उज्ज्वल स्फूर्ति थी। 'स्फूर्ति' से आशय उत्साह, चेतना और कार्य करने की प्रेरणा है; 'उज्ज्वल' विशेषण इस प्रेरणा की सुखद और प्रकाशपूर्ण प्रकृति दर्शाता है। उसके स्नेह और साथ से प्रिय को जीवन में उमंग मिलती थी। वह प्रिय की प्यारी अभिलाषाओं की पूर्ति भी थी, अर्थात जिन आत्मीय सुखों और संबंधों की प्रिय ने कामना की थी, वे उसे उसके साथ प्राप्त हुए थे। यहाँ प्रेम को केवल आकर्षण नहीं, जीवन को अर्थ और उत्साह देने वाली शक्ति बताया गया है।

चरण 3: आशाओं की मूर्ति और हृदय-पाश समझाएँ 'बड़ी-बड़ी आशाओं' की 'मूर्ति' कहने का भाव यह है कि प्रिय की आशाएँ वक्त्री के रूप में साकार हो उठी थीं। अमूर्त इच्छाओं और भविष्य की सुंदर कल्पनाओं को उसके व्यक्तित्व में मूर्त रूप मिला था। आगे वह आत्मीय संबोधन 'सखे' के साथ पूछती है कि प्रिय उसे अकेली छोड़कर कहाँ जाएगा। इस प्रश्न में वियोग की आशंका भी है और अपने प्रेम पर भरोसा भी। दोनों हृदय के प्रेमपूर्ण बंधन में बँधे हैं। 'हृदय-पाश' किसी वास्तविक रस्सी का बंधन नहीं, बल्कि स्नेह और स्मृतियों का संबंध है। इसलिए वक्त्री विश्वासपूर्वक कहती है कि प्रिय उसे तोड़ नहीं सकेगा; शारीरिक दूरी हृदय की आत्मीयता को सहज ही समाप्त नहीं करती।

चरण 4: काव्य-सौंदर्य स्पष्ट करें भाषा सरल, मधुर और भावपूर्ण खड़ी बोली है। 'स्फूर्ति' और 'पूर्ति' की ध्वनि-समानता लय पैदा करती है। 'बड़ी-बड़ी' में पुनरुक्ति से आशाओं की व्यापकता उभरती है। 'आशाओं की मूर्ति' में अमूर्त आशा का साकार रूप तथा 'हृदय-पाश' में प्रेम का बंधन के रूप में चित्रण रूपकात्मक है। 'सखे' की पुनरावृत्ति संबोधन को आत्मीय बनाती है। 'कहाँ जाओगे' का प्रश्न उत्तर माँगने से अधिक प्रेम की अटूट शक्ति का विश्वास व्यक्त करता है। गीतात्मकता तथा कोमल भावनाओं की सहज अभिव्यक्ति इस अंश की विशेषताएँ हैं।

चरण 5: निष्कर्ष वक्त्री अपने प्रिय की प्रेरणा, अभिलाषाओं की पूर्ति और आशाओं का मूर्त रूप रही है। इसी गहरी आत्मीयता के कारण उसे विश्वास है कि प्रिय दूरी बना सकता है, पर हृदय में बसे प्रेम और स्मृतियों का संबंध नहीं तोड़ सकता।

त्वरित सुझाव: 'उज्ज्वल स्फूर्ति' को प्रेरणा, 'आशाओं की मूर्ति' को आशाओं का साकार रूप और 'हृदय-पाश' को प्रेम का बंधन लिखें; इन्हें वास्तविक प्रकाश, प्रतिमा या रस्सी न मानें।

2(क). नीचे लिखे काव्यांशों में से किन्हीं दो का काव्य-सौन्दर्य स्पष्ट कीजिए :

सिंही की गोद में छीनता है शिशु कौन ?
मौन भी क्या रहती वह रहते प्राण ?
रे अजान,
एक मेषमाता ही
रहती है निर्निमेष —
दुर्बल वह —
छिनती संतान जब,
जन्म पर अपने अभिशप्त
तप्त आँसू बहाती है । [4 अंक]

हल:

अवधारणा:

- काव्य-सौन्दर्य में भाव-सौन्दर्य और शिल्प-सौन्दर्य दोनों स्पष्ट किए जाते हैं। भाव बताते समय काव्यांश के केंद्रीय विचार और शिल्प बताते समय भाषा, बिंब, शैली तथा उनकी प्रभावशीलता को आधार बनाना चाहिए।
- इस अंश में सिंही और मेषमाता के विपरीत व्यवहार से शक्ति, प्रतिरोध और दुर्बलता का अंतर व्यक्त हुआ है। दोनों का संतान के प्रति प्रेम समान है, पर अपनी संतान की रक्षा करने की क्षमता भिन्न है।

चरण 1: भाव-सौन्दर्य और केंद्रीय विचार कवि प्रश्न करता है कि सिंही की गोद से उसका शिशु छीनने का साहस कौन कर सकता है। यदि कोई ऐसा करे भी, तो सिंही जीवित रहते मौन नहीं रह सकती; वह संतान की रक्षा के लिए प्रतिरोध करेगी। इसके विपरीत दुर्बल मेषमाता अपनी संतान छीने जाते समय असहाय होकर देखती रह जाती है और आँसू बहाती है। इस विरोध से कवि बताता है कि केवल स्नेह पर्याप्त नहीं, उसकी रक्षा के लिए साहस और शक्ति भी आवश्यक हैं।

चरण 2: बिंब, प्रतीक और भावों का प्रभाव सिंही शक्ति और निर्भय प्रतिरोध का, जबकि मेषमाता दुर्बलता और विवशता का प्रतीक बनती है। 'रहती है निर्निमेष' से स्तब्ध और असहाय माँ का दृश्य उभरता है। 'तप्त आँसू' उसकी तीव्र पीड़ा को मूर्त करते हैं। अपने जन्म को अभिशप्त मानना उसकी विवशता की चरम स्थिति है। सिंही के प्रसंग में ओज और मेषमाता के प्रसंग में करुणा का भाव उपस्थित है; यह भाव-विरोध पाठक को दुर्बलता के दुष्परिणाम का अनुभव कराता है।

चरण 3: भाषा और शैली का सौन्दर्य आरंभ के प्रश्न उत्तर माँगने के लिए नहीं, सिंही के साहस को दृढ़ता से स्थापित करने के लिए हैं। 'रे अजान' संबोधन कथन को तीखा और चेतावनीपूर्ण बनाता है। भाषा में 'निर्निमेष', 'अभिशप्त' और 'तप्त' जैसे तत्सम शब्द गंभीरता लाते हैं। छोटी-बड़ी पंक्तियाँ तथा 'दुर्बल वह' जैसे विराम भावों की तीव्रता बढ़ाते हैं। मुक्तछंद की सहज लय, प्रश्नात्मक शैली और पशु-बिंब कथ्य को मार्मिक तथा प्रभावशाली बनाते हैं।

चरण 4: निष्कर्ष इस काव्यांश का सौन्दर्य सिंही के साहसी प्रतिरोध और मेषमाता की करुण विवशता के विरोध में है। सजीव बिंब, प्रतीक, प्रश्नात्मक शैली और प्रभावपूर्ण विराम शक्ति तथा आत्मरक्षा की आवश्यकता को हृदयग्राही ढंग से व्यक्त करते हैं।

त्वरित सुझाव: पहले सिंही और मेषमाता का भावगत अंतर लिखें; फिर 'निर्निमेष', 'तप्त आँसू' और आरंभिक प्रश्नों से शिल्प-सौन्दर्य के उदाहरण दें।

2(ख). नीचे लिखे काव्यांशों में से किन्हीं दो का काव्य-सौन्दर्य स्पष्ट कीजिए :

जो तुम तोरौ राम मै नहिं तोरूँ ।

तुम सों तोरि कवन सों जोरूँ ।।

तीरथ बरत न करूँ अँदेसा ।

तुम्हरे चरन कमल क भरोसा ।। [4 अंक]

हल:

अवधारणा:

- भक्तिपरक काव्य का भाव-सौन्दर्य ईश्वर के प्रति प्रेम, विश्वास और आत्मसमर्पण में प्रकट होता है। शिल्प-सौन्दर्य में लोकभाषा, लय, संबोधन और अलंकार का भावों से संबंध स्पष्ट करना चाहिए।
- इस पद का केंद्रीय भाव अनन्य भक्ति है। भक्त राम को अपना एकमात्र आश्रय मानता है और किसी भी स्थिति में उनसे अपना संबंध नहीं तोड़ना चाहता।

चरण 1: अनन्य प्रेम और अटूट संबंध का भाव भक्त राम से कहता है कि यदि आप मुझसे संबंध तोड़ भी लें, तब भी मैं आपसे संबंध नहीं तोड़ूँगा। यह कथन भक्त की प्रेमपूर्ण दृढ़ता को व्यक्त करता है। 'तुम सों तोरि कवन सों जोरूँ' में उसका भाव है कि राम के अतिरिक्त कोई ऐसा आश्रय है ही नहीं जिससे वह संबंध जोड़ सके। इस प्रकार पद में भक्ति किसी लाभ या प्रतिदान की शर्त पर आधारित नहीं है; वह पूर्ण निष्ठा और आत्मसमर्पण का रूप है।

चरण 2: बाह्य साधनों के स्थान पर विश्वास की प्रधानता भक्त को तीर्थ और व्रत जैसे धार्मिक अनुष्ठानों के न करने की चिंता नहीं है, क्योंकि उसे प्रभु के चरणों का भरोसा है। उसका बल बाहरी कर्मकांड की अपेक्षा हृदय की सच्ची भक्ति पर है। 'तुम्हरे चरन कमल क भरोसा' में राम के चरण भक्त के आश्रय और विश्वास का केंद्र बनते हैं। इस कथन में निश्चिंतता, विनय और भगवान के प्रति गहरा अनुराग झलकता है।

चरण 3: भाषा, अलंकार और गेयता का सौन्दर्य पद की भाषा सहज लोकभाषा है। 'तोरौ', 'तोरूँ', 'सों', 'कवन', 'तीरथ' और 'बरत' जैसे रूप कथन को आत्मीय तथा जनसुलभ बनाते हैं। राम को सीधे संबोधित करने से भक्त और भगवान के निकट संबंध का अनुभव होता है। 'चरन कमल' में चरणों पर कमल का सीधा आरोप होने से रूपक अलंकार है, जो चरणों की सुंदरता और पवित्रता को उभारता है। 'तोरूँ-जोरूँ' तथा 'अँदेसा-भरोसा' की तुक और शब्दों की लय पद को गेय बनाती है। संबंध तोड़ने और जोड़ने का शब्दगत विरोध भक्त की अटल निष्ठा को प्रभावशाली ढंग से सामने लाता है।

चरण 4: निष्कर्ष पद का भाव-सौन्दर्य राम के प्रति अनन्य प्रेम, अटूट विश्वास और पूर्ण समर्पण में है। सरल लोकभाषा, आत्मीय संबोधन, रूपक और गेय लय इस भक्तिभाव को सहज तथा हृदयस्पर्शी बनाते हैं।

त्वरित सुझाव: 'कवन सों जोरूँ' से अनन्य भक्ति और 'चरन कमल' से रूपक स्पष्ट करें; हर शिल्पगत विशेषता को पद के भाव से जोड़कर लिखें।

2(ग). नीचे लिखे काव्यांशों में से किन्हीं दो का काव्य-सौन्दर्य स्पष्ट कीजिए :

इस पर भी आदमी
ईर्ष्या, अहं, स्वार्थ, घृणा, अविश्वास लीन
संख्यातीत शंख-सी दीवारें उठाता है
अपने को दूजे का स्वामी बताता है
देशों की कौन कहे
एक कमरे में
दो दुनिया रचाता है

[4 अंक]

हल:

अवधारणा:

- काव्य-सौन्दर्य स्पष्ट करते समय कविता के विचार के साथ भाषा और अभिव्यक्ति की विशेषताओं को भी उदाहरण सहित बताना चाहिए। इस अंश में मनुष्य के पारस्परिक अलगाव और प्रभुत्व की इच्छा की आलोचना की गई है।
- कविता की 'दीवारें' मनुष्य के बीच बनने वाली मानसिक और भावनात्मक बाधाओं की प्रतीक हैं। एक ही कमरे में 'दो दुनिया' निकट रहकर भी मन से दूर होने की स्थिति व्यक्त करती है।

चरण 1: भाव-सौन्दर्य और सामाजिक चेतना कवि बताता है कि ईर्ष्या, अहंकार, स्वार्थ, घृणा और अविश्वास में डूबा मनुष्य दूसरों से अपने संबंधों को विभाजित करता जाता है। वह स्वयं को दूसरे का स्वामी बताकर समानता के स्थान पर प्रभुत्व स्थापित करना चाहता है। इससे सहयोग और आत्मीयता नष्ट होते हैं। काव्यांश में इस मानवीय प्रवृत्ति की आलोचना के माध्यम से प्रेम, विश्वास और समानता का महत्त्व उभरता है।

चरण 2: प्रतीक, उपमा और विरोधाभासी स्थिति 'संख्यातीत शंख-सी दीवारें' में 'सी' के द्वारा दीवारों की शंख से तुलना होने के कारण उपमा अलंकार है। शंख के आवरण का बिंब अपने को भीतर बंद कर लेने की प्रवृत्ति का संकेत करता है। 'दीवारें' केवल भौतिक निर्माण नहीं, मनुष्य के भीतर की संकीर्णता और परस्पर दूरी का प्रतीक हैं। 'एक कमरे में दो दुनिया' अत्यंत प्रभावपूर्ण बिंब है: रहने का स्थान एक है, पर सोच, भावनाएँ और हित अलग-अलग हैं। भौतिक निकटता और मानसिक दूरी का यह विरोध आधुनिक जीवन की विडंबना उजागर करता है।

चरण 3: भाषा और अभिव्यक्ति की विशेषताएँ 'देशों की कौन कहे' कहकर कवि व्यापक स्तर के विभाजन से दृष्टि को एक छोटे कमरे तक ले आता है। इससे स्पष्ट होता है कि अलगाव केवल देशों के बीच नहीं, निकट रहने वाले व्यक्तियों में भी है। 'ईर्ष्या, अहं, स्वार्थ, घृणा, अविश्वास' की क्रमिक सूची मनुष्य की नकारात्मक वृत्तियों का घनत्व बढ़ाती है। भाषा खड़ी बोली है, जिसमें तत्सम और बोलचाल के शब्द मिलकर गंभीर विचार को सहज बनाते हैं। 'उठाता है', 'बताता है', 'रचाता है' की आवृत्तिमूलक लय और मुक्तछंद की छोटी-बड़ी पंक्तियाँ कथन को प्रवाह देती हैं। स्वर आलोचनात्मक और व्यंग्यपूर्ण है।

चरण 4: निष्कर्ष काव्यांश का सौन्दर्य मनुष्य के अहंकारजन्य अलगाव की मार्मिक आलोचना में है। दीवारों का प्रतीक, शंख की उपमा, एक कमरे में दो दुनियाओं का बिंब और व्यंग्यपूर्ण मुक्तछंद इस सामाजिक विडंबना को प्रभावी बनाते हैं।

त्वरित सुझाव: 'दीवारें' का प्रतीकार्थ और 'एक कमरे में दो दुनिया' की विडंबना अवश्य समझाएँ; केवल अलंकारों के नाम गिनाने से काव्य-सौन्दर्य पूरा नहीं होता।

3(क). नीचे लिखे प्रश्नों में से किन्हीं दो के उत्तर लगभग 60-60 शब्दों में दीजिए :

'ये अनाज की पूलें तेरे काँधे झूलें' कविता में कवि ने वायु को किसान की उज्ज्वल गाथा और सूर्य को उसका रथ क्यों बताया है ? [4 अंक]

हल:

अवधारणा:

- कविता में किसान के परिश्रम और अन्न उत्पन्न करने की शक्ति का गौरव व्यक्त हुआ है। प्रकृति के उपादानों से उसका संबंध जोड़कर उसके व्यक्तित्व को विराट बनाया गया है।
- वायु को गाथा और सूर्य को रथ कहना रूपकात्मक अभिव्यक्ति है। इनका अर्थ किसान के यश का प्रसार और उसकी निरंतर सक्रिय जीवनयात्रा से समझना चाहिए।

चरण 1: वायु और उज्ज्वल गाथा का संबंध समझें किसान अपने श्रम से धरती को अन्नपूर्णा बनाता है और सबके जीवन का आधार तैयार करता है। खेतों में लहलहाती फसल उसके इसी श्रम की सफलता प्रकट करती है। चलती हुई वायु मानो उसकी उपलब्धि का संदेश चारों ओर पहुँचाती है। इसलिए कवि ने वायु में किसान की उज्ज्वल गाथा का अनुभव किया है। यहाँ गाथा किसान के लोकहितकारी कर्म और उसके गौरव की है।

चरण 2: सूर्य के रथ होने का आशय स्पष्ट करें सूर्य प्रकाश और ऊर्जा देकर खेती तथा जीवन की गति बनाए रखता है। उसका उदय किसान के काम के दिन को आगे बढ़ाता है और उसका ताप फसल के विकास में सहायक होता है। सूर्य को किसान का रथ कहना किसान की गतिशीलता तथा प्रकृति से उसके घनिष्ठ संबंध को महत्त्व देना है। इस कल्पना में साधारण किसान महान कर्मशील नायक बन जाता है, जिसकी जीवनयात्रा में सूर्य भी सहायक है। उत्तर में दोनों बिंबों को अलग-अलग खोलकर अंत में किसान के श्रम की महिमा से जोड़ना चाहिए।

चरण 3: निष्कर्ष किसान अपने श्रम से अन्न उपजाकर संसार का पोषण करता है। लहलहाते खेतों में बहती वायु मानो उसके परिश्रम और सफलता की उज्ज्वल गाथा चारों ओर सुनाती है। सूर्य प्रकाश, ताप और ऊर्जा देकर उसकी खेती तथा कर्मयात्रा को गति देता है, इसलिए वह उसका रथ है। इन रूपकों से कवि ने किसान के श्रम, गौरव और प्रकृति से आत्मीय संबंध को प्रतिष्ठित किया है।

त्वरित सुझाव: वायु के साथ यश के प्रसार और सूर्य के साथ ऊर्जा तथा गति को जोड़ें; दोनों कारणों को किसान के श्रम की प्रतिष्ठा पर केंद्रित रखें।

3(ख). नीचे लिखे प्रश्नों में से किन्हीं दो के उत्तर लगभग 60-60 शब्दों में दीजिए :

'जड़ की मुसकान' कविता में फूलों ने अपनी श्रेष्ठता दर्शाने के लिए क्या-क्या तर्क दिए हैं ? [4 अंक]

हल:

अवधारणा:

- कविता में वृक्ष के अंगों के माध्यम से अपनी उपलब्धियों पर अभिमान करने की प्रवृत्ति और आधार के मौन योगदान का अंतर दिखाया गया है।
- फूल अपने रंग, रूप, सुगंध और आकर्षण को श्रेष्ठता का आधार बनाते हैं। उनके दावों को प्रस्तुत करते समय उन्हें कवि का अंतिम मत नहीं मानना चाहिए।

चरण 1: फूलों के सौंदर्य संबंधी दावे पहचानें फूल अपनी सुंदरता को सबसे बड़ी उपलब्धि समझते हैं। उनके रंग और मनोहर रूप से वृक्ष की शोभा बढ़ती है तथा देखने वालों का ध्यान आकर्षित होता है। उनकी सुगंध आसपास के वातावरण को महकाती है। इस प्रकार वे दिखाई देने वाले सौंदर्य और चारों ओर फैलने वाली सुवास को अपने महत्त्व का प्रमाण मानते हैं। वे अपने गुणों की तुलना जड़ की छिपी हुई, बाहरी शोभा से रहित स्थिति से करते हैं।

चरण 2: आकर्षण के तर्क और उसकी सीमा समझें फूलों का तर्क है कि लोग उनके रूप और सुगंध से मुग्ध होते हैं तथा भौंरे उनके पास मंडराते हैं। उन्हें मिलने वाला यह आकर्षण और आदर उनके अहंकार को बढ़ाता है। वे मानते हैं कि वृक्ष को सुंदर और प्रिय बनाने का श्रेय उन्हीं को है। किंतु अपने दावों में वे जड़ के उस पोषण को भूल जाते हैं जिससे उनका खिलना संभव होता है। प्रश्न में फूलों के तर्क पूछे गए हैं, इसलिए उत्तर का मुख्य भाग उनके सौंदर्य, सुगंध, आकर्षण और वृक्ष की शोभा बढ़ाने के दावे पर केंद्रित होना चाहिए; जड़ का

उल्लेख उन दावों की सीमा स्पष्ट करता है।

चरण 3: निष्कर्ष फूलों ने अपने सुंदर रंग-रूप, मनमोहक सुगंध और आकर्षण को अपनी श्रेष्ठता का प्रमाण बताया। उनके अनुसार वे वृक्ष की शोभा बढ़ाते हैं, वातावरण को महकाते हैं और सबको मुग्ध करते हैं। भौंरों का मंडराना तथा लोगों का उनके सौंदर्य पर रीझना उनके महत्त्व को प्रमाणित करता है। इसी बाहरी आकर्षण के गर्व में वे अपने पोषण के मूल आधार जड़ का योगदान भूल जाते हैं।

त्वरित सुझाव: फूलों के तर्कों में रूप, सुगंध और आकर्षण अलग-अलग लिखें; अंत में उनके अभिमान को जड़ के मौन योगदान से जोड़ें।

3(ग). नीचे लिखे प्रश्नों में से किन्हीं दो के उत्तर लगभग 60-60 शब्दों में दीजिए :

कवि 'मैं और मेरा पिट्ठू' कविता में पेट में पिट्ठू की स्थिति बताकर, जीवन की किस विडम्बना की ओर संकेत करना चाहता है ? [4 अंक]

हल:

अवधारणा:

- कविता का पिट्ठू पेट की भूख और जीविका की अनिवार्य आवश्यकता का प्रतीक है। पेट में उसकी स्थिति बताने से उसका मनुष्य के जीवन से अभिन्न संबंध स्पष्ट होता है।
- विडम्बना यह है कि मनुष्य जिस पेट को अपने लिए भरता है, वही आवश्यकता उसकी स्वतंत्रता, इच्छाओं और आचरण पर शासन करने लगती है।

चरण 1: पेट में पिट्ठू होने का संकेत समझें सामान्यत: पिट्ठू पीठ पर लादा जाने वाला भार होता है, जिसे आवश्यकता पड़ने पर अलग किया जा सकता है। कविता में उसे पेट में स्थित बताना अर्थपूर्ण है। भूख शरीर के भीतर की अनिवार्य माँग है; मनुष्य उसे उतारकर कहीं रख नहीं सकता। उसे जीवित रहने के लिए बार-बार भोजन जुटाना पड़ता है। इसलिए पिट्ठू केवल बाहरी सामान का बोझ नहीं, जीवन के साथ जुड़ी हुई ऐसी आवश्यकता का रूप है जिससे छुटकारा संभव नहीं।

चरण 2: जीवन की उलटी व्यवस्था स्पष्ट करें मनुष्य चाहता है कि वह अपनी इच्छा, विवेक और आदर्शों के अनुसार जीवन जिए। किंतु पेट भरने की चिंता उसे अनेक बार ऐसे काम और समझौते करने को विवश करती है जिन्हें वह स्वतंत्र रूप से चुनना नहीं चाहता। जिस आवश्यकता की पूर्ति जीवन चलाने का साधन होनी चाहिए, वही जीवन का नियंत्रक बन जाती है। पिट्ठू मनुष्य के भीतर रहते हुए भी उसे अपने पीछे चलाता है। इसी उलटाव में व्यंग्य और करुणा दोनों हैं। उत्तर में केवल गरीबी का उल्लेख पर्याप्त नहीं; भूख के कारण मनुष्य की स्वतंत्रता पर पड़ने वाला प्रभाव भी स्पष्ट करना चाहिए।

चरण 3: निष्कर्ष पेट में पिट्ठू की स्थिति भूख और जीविका की अनिवार्यता का प्रतीक है। मनुष्य इस बोझ को बाहर रखकर उससे मुक्त नहीं हो सकता। उसे पेट भरने के लिए निरंतर संघर्ष और कभी अनचाहे समझौते करने पड़ते हैं। विडम्बना यह है कि मनुष्य पेट का स्वामी होकर भी उसकी माँगों का दास बन जाता है; जीवन चलाने की आवश्यकता ही उसके जीवन पर शासन करती है।

त्वरित सुझाव: उत्तर में पेट का प्रतीकार्थ, उससे अलग न हो सकने की विवशता और स्वामी के दास बन जाने की विडम्बना को क्रम से जोड़ें।

4(क). प्रस्तुत गद्यांशों में से किन्हीं दो की सप्रसंग व्याख्या कीजिए :

आदमी की ज़िंदगी आपने-आप में बहुत ही अकेली और नीरस होती है। आदमी-आदमी के रिश्ते नाते उसका बहुत दूर तक साथ नहीं देते। पर जब वह इनसे आगे बढ़कर एक व्यापक सम्बन्ध कायम करने की कोशिश करता है, तो उसके साथ वन, पर्वत, नदी आदि सब चल पड़ते हैं। तब वह अकेला नहीं रह जाता। आज वह वनस्पतियों और पानी के रिश्ते को भूलकर अपने को भी अकेला बना रहा है और उनके आपसी संबंधों का भी विच्छेद करता जा रहा है। [6 अंक]

हल:

अवधारणा:

- सप्रसंग व्याख्या में प्रसंग, मूल भाव, प्रमुख कथनों का आशय और भाषा की विशेषताएँ स्पष्ट की जाती हैं।
- इस गद्यांश का केंद्रीय विचार है कि मनुष्य का जीवन प्रकृति से आत्मीय संबंध स्थापित करने पर व्यापक और सरस बनता है।

चरण 1: संदर्भ और प्रसंग प्रस्तुत गद्यांश में मनुष्य के अकेलेपन और प्राकृतिक जगत के साथ उसके संबंध पर विचार किया गया है। प्रसंग यह है कि केवल अपने निजी जीवन और मानवीय रिश्तों तक सीमित रहने से मनुष्य पूर्ण आत्मीयता का अनुभव नहीं कर पाता। लेखक इसी सीमित दृष्टि के स्थान पर वन, पर्वत, नदियों और वनस्पतियों तक फैलने वाले व्यापक संबंध की आवश्यकता समझाता है।

चरण 2: सीमित जीवन और व्यापक आत्मीयता की व्याख्या लेखक कहता है कि अपने ही सुख-दुःख और आवश्यकताओं में बंद मनुष्य की जिंदगी अकेली और नीरस हो जाती है। मनुष्यों के बीच के रिश्तों की भी अपनी सीमाएँ होती हैं; वे हर परिस्थिति में बहुत दूर तक साथ नहीं निभाते। इसका अर्थ मानवीय रिश्तों को निरर्थक बताना नहीं, बल्कि जीवन को केवल उन्हीं तक सीमित न रखना है। जब मनुष्य अपने बाहर के संसार से आत्मीयता जोड़ता है, तब उसे वन, पर्वत और नदी भी अपने साथी प्रतीत होते हैं। उनका साथ चल पड़ना वास्तविक रूप से चलना नहीं, बल्कि उनके प्रति अपनापन अनुभव करने का संकेत है। इस अनुभव से मनुष्य का अकेलापन घटता है और जीवन में विविधता तथा रस आते हैं।

चरण 3: प्राकृतिक संबंधों के विच्छेद का आशय गद्यांश के अंतिम भाग में आज के मनुष्य की उस प्रवृत्ति की आलोचना है जिसमें वह वनस्पति और पानी के परस्पर संबंध को भूल रहा है। प्रकृति के घटक एक-दूसरे से जुड़े हैं; उन्हें अलग-अलग वस्तुएँ मानकर व्यवहार करना उनके संबंधों को नष्ट करता है। मनुष्य जब इस संबंध-जाल से स्वयं को अलग करता है, तो वह अपना अकेलापन भी बढ़ाता है। इस प्रकार हानि दोहरी है: प्राकृतिक तत्वों का आपसी संतुलन टूटता है और मनुष्य का उनके साथ आत्मीय जुड़ाव भी कम होता है। लेखक व्यापक संबंध कायम करने का आग्रह करके इस अलगाव से बाहर आने की दिशा दिखाता है।

चरण 4: भाषा और अभिव्यक्ति की विशेषताएँ भाषा सरल, विचारप्रधान और आत्मीय है। वन, पर्वत और नदी के साथ चल पड़ने की अभिव्यक्ति में मानवीकरण है, जिससे प्रकृति निर्जीव पृष्ठभूमि के स्थान पर साथी बनकर सामने आती है। 'अकेला' और 'व्यापक सम्बन्ध' का विरोध मूल विचार को स्पष्ट करता है। आरंभ में व्यक्तिगत अकेलेपन की चर्चा और अंत में प्राकृतिक संबंधों के टूटने की चेतावनी देकर लेखक व्यक्ति और पर्यावरण की समस्याओं को एक सूत्र में जोड़ता है।

चरण 5: निष्कर्ष गद्यांश का संदेश है कि मनुष्य की सार्थक और सरस जीवन-यात्रा प्रकृति से आत्मीय संबंध तथा उसके घटकों की परस्पर निर्भरता को समझने पर आधारित है। प्रकृति से अलगाव उसके अकेलेपन और प्राकृतिक असंतुलन, दोनों को बढ़ाता है।

त्वरित सुझाव: व्याख्या में दो परिणाम अलग-अलग स्पष्ट करें: प्रकृति से जुड़ने पर अकेलापन घटता है और उससे कटने पर प्राकृतिक घटकों के आपसी संबंध भी टूटते हैं।

4(ख). प्रस्तुत गद्यांशों में से किन्हीं दो की सप्रसंग व्याख्या कीजिए :

देखते-देखते पत्तों की वह जोड़ी उद्ग्रीव हुई। मानो उसमें चैतन्य भर आया। उन्होंने अपने आस-पास और नीचे देखा। जाने उन्हें क्या दिखा कि वे काँपने लगे। उनके तन में लालिमा व्याप गई। कुछ क्षण बाद मानो वे एक चमक से चमक आए। जैसे उन्होंने खण्ड को कुल में देख लिया। देख लिया कि कुल है, खण्ड कहाँ है। [6 अंक]

हल:

अवधारणा:

- सप्रसंग व्याख्या में पत्तों के व्यवहार का वर्णन करते हुए उसमें निहित दार्शनिक भाव भी स्पष्ट करना आवश्यक है।
- यहाँ 'खण्ड' अलग दिखाई देने वाले छोटे अंश का और 'कुल' उस व्यापक समग्रता का द्योतक है जिसका वह अंश है।

चरण 1: संदर्भ और प्रसंग प्रस्तुत गद्यांश में पत्तों की एक जोड़ी का चित्रण मानवीय चेतना और अनुभूति से युक्त रूप में किया गया है। प्रसंग उनके जाग्रत होकर अपने आसपास देखने और अपनी सत्ता का व्यापक समग्रता से संबंध पहचानने का है। लेखक पत्तों की गतिविधियों के माध्यम से अलगाव के स्थान पर अखंडता का बोध सामने रखता है।

चरण 2: पत्तों की चैतन्य अवस्था की व्याख्या 'उद्ग्रीव' होने का अर्थ गर्दन उठाकर उत्सुकता से देखने की मुद्रा धारण करना है। पत्तों का ऐसा होना बताता है कि वे मानो सजग हो गए हों और अपने परिवेश को पहचानना चाहते हों। वे आसपास और नीचे देखते हैं। फिर उनका काँपना और लालिमा से भर जाना उनके भीतर उठने वाली संवेदनाओं की तरह चित्रित किया गया है। 'जाने उन्हें क्या दिखा' कहकर लेखक इस परिवर्तन के प्रति विस्मय व्यक्त करता है; इसलिए काँपने को किसी निश्चित बाहरी घटना या निश्चित भय से जोड़ना आवश्यक नहीं है। यहाँ प्राकृतिक दृश्य को चेतन जीवन की अनुभूति के रूप में प्रस्तुत किया गया है।

चरण 3: खंड से कुल तक पहुँचने वाले बोध की व्याख्या थोड़ी देर बाद पत्तों में दिखाई देने वाली चमक एक नए बोध का संकेत बन जाती है। जैसे उन्होंने जान लिया हो कि वे अलग-थलग और अपने आप में पूर्ण इकाइयाँ नहीं हैं, बल्कि व्यापक जीवन का हिस्सा हैं। 'खण्ड को कुल में देख लिया' का आशय है अपने छोटे अस्तित्व को उस समग्रता से जुड़ा देखना जिसमें वह स्थित है। अगले कथन 'कुल है, खण्ड कहाँ है' में यह भाव और गहरा हो जाता है। समग्रता का बोध हो जाने पर अंश की अलगावपूर्ण सत्ता का आग्रह मिट जाता है। इसका अर्थ पत्तों का भौतिक रूप से नष्ट हो जाना नहीं, बल्कि उनके माध्यम से अलगाव की धारणा का समाप्त होना व्यक्त करना है। लेखक इस प्रकार दृश्य प्रकृति से जीवन की एकता के विचार तक पहुँचता है।

चरण 4: भाषा और शिल्प की विशेषताएँ पत्तों का उद्ग्रीव होना, देखना और किसी सत्य को पहचानना मानवीकरण के उदाहरण हैं। 'मानो' तथा 'जैसे' से व्यक्त संभावनाएँ वर्णन को कल्पनाशील बनाती हैं। काँपना, लालिमा और चमक दृश्य बिंब रचते हैं, जबकि 'खण्ड' और 'कुल' जैसे शब्द दार्शनिक अर्थ देते हैं। छोटे वाक्यों और 'देख लिया' की पुनरावृत्ति से अनुभूति की तीव्रता बढ़ती है। वर्णनात्मक आरंभ धीरे-धीरे चिंतनपूर्ण निष्पत्ति तक पहुँचता है।

चरण 5: निष्कर्ष पत्तों की जोड़ी के माध्यम से गद्यांश यह भाव व्यक्त करता है कि अलग दिखाई देने वाला अंश व्यापक समग्रता से अभिन्न है। इस संबंध की पहचान अलगाव की अनुभूति को मिटाकर जीवन की एकता का बोध कराती है।

त्वरित सुझाव: 'खण्ड' को अंश और 'कुल' को समग्रता मानकर अंतिम दो वाक्य समझाएँ; केवल पत्तों के रंग और गति का वर्णन करके व्याख्या समाप्त न करें।

4(ग). प्रस्तुत गद्यांशों में से किन्हीं दो की सप्रसंग व्याख्या कीजिए :

मिलर बोले, "सोचते होंगे मुझ जैसे को तो बंदर का चित्र बनवाना चाहिए। हम लोग कहते तो हैं कि बंदर से आदमी बने, लेकिन आदमी बनकर अब हम प्रगति के साथ देवता बनने के स्थान पर पुनः बंदर ही बन रहे हैं, संपन्न बंदर, शक्तिशाली बंदर। शस्त्रों की रेस में अधिक संपन्न, दुनिया को खत्म करने की जिसमें अधिक ताकत वह अधिक प्रगत।" [6 अंक]

हल:

अवधारणा:

- व्यंग्यात्मक गद्यांश की व्याख्या में कथन के शाब्दिक अर्थ से आगे जाकर उसके वास्तविक आशय और आलोचना के लक्ष्य को पहचानना होता है।
- यहाँ भौतिक संपन्नता और विनाशकारी शक्ति को प्रगति का मापदंड मानने की प्रवृत्ति की आलोचना की गई है।

चरण 1: संदर्भ और प्रसंग प्रस्तुत गद्यांश में मिलर का कथन दिया गया है। वे अपने जैसे व्यक्ति के लिए बंदर का चित्र बनवाने की बात कहकर आधुनिक मनुष्य की प्रगति पर व्यंग्य करते हैं। प्रसंग मनुष्य के विकास, उसकी बढ़ती संपन्नता और शस्त्रों की होड़ के बीच उपस्थित विरोधाभास का है। कथन आगे बढ़ते हुए स्पष्ट करता है कि बाहरी शक्ति बढ़ जाना मानवीय श्रेष्ठता बढ़ जाने का प्रमाण नहीं है।

चरण 2: आदमी से फिर बंदर बनने का आशय मिलर मनुष्य के बंदर से विकसित होने की प्रचलित धारणा का सहारा लेकर एक तीखा विरोधाभास सामने रखते हैं। मनुष्य बन जाने के बाद विकास की दिशा देवत्व की ओर होनी चाहिए थी, अर्थात उसमें उदारता, करुणा और कल्याण की भावना का विस्तार होना चाहिए था। किंतु वह अधिक शक्ति पाकर भी विवेकपूर्ण और मानवीय व्यवहार नहीं कर रहा है। इसलिए उसे फिर बंदर बनने वाला कहा गया है। यहाँ बंदर बनना वास्तविक जैविक परिवर्तन नहीं, मनुष्यता से पतन का व्यंग्यात्मक संकेत है। 'संपन्न बंदर' और 'शक्तिशाली बंदर' से आशय ऐसे मनुष्य से है जिसके पास साधन और शक्ति तो बहुत हैं, किंतु उनके उचित उपयोग के लिए आवश्यक मानवीय संवेदना नहीं है।

चरण 3: शस्त्रों की दौड़ और प्रगति की विडंबना गद्यांश के अंतिम वाक्य में प्रगति की प्रचलित कसौटी पर प्रहार किया गया है। शस्त्रों की स्पर्धा में जिसके पास अधिक हथियार और दुनिया को नष्ट करने की अधिक क्षमता है, उसे अधिक प्रगत समझा जा रहा है। यह जीवन की रक्षा के बजाय उसके विनाश की क्षमता का सम्मान करना है। इसीलिए 'वह अधिक प्रगत' को मिलर की सीधी स्वीकृति नहीं, व्यंग्य समझना चाहिए। कथन का आशय है कि संपन्नता और वैज्ञानिक शक्ति तभी सार्थक हैं जब वे मानव-कल्याण में लगें। यदि उनके बढ़ने से विनाश का खतरा बढ़ता है, तो ऐसी उपलब्धि के साथ नैतिक पतन भी जुड़ा हुआ है।

चरण 4: भाषा और अभिव्यक्ति की विशेषताएँ भाषा संवादात्मक, सहज और व्यंग्यपूर्ण है। 'बंदर', 'आदमी' और 'देवता' के माध्यम से क्रमशः विवेकहीनता, मनुष्यता और उच्च मानवीय आदर्शों के स्तर उभरते हैं। 'संपन्न बंदर, शक्तिशाली बंदर' की समानांतर अभिव्यक्तियाँ भौतिक शक्ति और नैतिक कमजोरी का विरोध तीखा करती हैं। 'प्रगति' शब्द का विडंबनापूर्ण प्रयोग पाठक को विकास की वास्तविक कसौटी पर विचार करने के लिए प्रेरित करता है।

चरण 5: निष्कर्ष मिलर का कथन शस्त्र-संपन्नता और विनाशकारी क्षमता को प्रगति मानने पर व्यंग्य है। इसका संदेश है कि सच्ची प्रगति मानवीय गुणों और कल्याणकारी विवेक का विकास है; इनके बिना बढ़ती शक्ति मनुष्य के नैतिक पतन का साधन बन सकती है।

त्वरित सुझाव: अंतिम वाक्य को सीधा समर्थन न मानें; स्पष्ट लिखें कि अधिक विनाश-शक्ति को अधिक प्रगति कहना व्यंग्य है और 'बंदर' नैतिक पतन का संकेत है।

5(क). नीचे लिखे प्रश्नों में से किन्हीं दो के उत्तर लगभग 60-60 शब्दों में दीजिए :

'मेरे लिए भारतीय होने का अर्थ' पाठ में लेखक ने देशप्रेम को एक घटना क्यों माना है ? यह घटना हर पीढ़ी में नए सिरे से कैसे घटित होती है ? [4 अंक]

हल:

अवधारणा:

- देशप्रेम अपने देश के साथ आत्मीय संबंध का अनुभव है। किसी विचार की परिभाषा याद कर लेने से यह अनुभव अपने आप नहीं हो जाता।
- परंपरा से मिले सांस्कृतिक संस्कार प्रत्येक पीढ़ी के जीवन में नए अनुभवों के माध्यम से फिर अर्थवान होते हैं।

चरण 1: देशप्रेम को घटना कहने का आशय समझें लेखक देशप्रेम को केवल एक विचार, नारा या राजनीतिक सिद्धांत की तरह नहीं देखते। वह व्यक्ति के भीतर घटने वाला जीवंत अनुभव है, जिसमें देश की धरती, लोग, भाषा, स्मृतियाँ और सांस्कृतिक जीवन उसके अपने अस्तित्व से जुड़ जाते हैं। इस आत्मीयता का अनुभव होना ही यहाँ घटना है। देश के बारे में जानकारी होना और उसके सुख-दुख को अपना मानना अलग बातें हैं। घटना शब्द इसी आंतरिक अनुभूति और लगाव पर बल देता है। इसे केवल किसी युद्ध या सार्वजनिक समारोह में घटने वाली घटना मानना आशय को संकुचित करेगा।

चरण 2: हर पीढ़ी में उसके नए जन्म को स्पष्ट करें पूर्वजों का देशप्रेम नई पीढ़ी को तैयार भावना के रूप में हस्तांतरित नहीं हो सकता। उसे भाषा, स्मृतियों और परंपरा की विरासत अवश्य मिलती है, पर इस विरासत से अपना जीवंत संबंध उसे स्वयं बनाना पड़ता है। अपने समय की परिस्थितियों में देश और देशवासियों के साथ जीते हुए वह उस आत्मीयता को फिर अनुभव करती है। इस तरह संबंध का आधार पुराना होते हुए भी उसकी अनुभूति नई होती है। पीढ़ी-दर-पीढ़ी देशप्रेम की निरंतरता इसी व्यक्तिगत और सामूहिक पुनरानुभव से बनी रहती है।

चरण 3: निष्कर्ष देशप्रेम लेखक के लिए मात्र विचार नहीं, देश के साथ आत्मीयता का जीवंत अनुभव है, इसलिए वह एक घटना है। पूर्वजों की अनुभूति नई पीढ़ी को ज्यों की त्यों नहीं मिल सकती। हर पीढ़ी अपने समय में देश की धरती, लोगों, भाषा और सांस्कृतिक स्मृतियों से अपना संबंध खोजती है। इसी नए अनुभव से देशप्रेम उसके भीतर फिर जन्म लेता है।

त्वरित सुझाव: उत्तर में पहले घटना का अर्थ आत्मीय अनुभूति लिखें; फिर विरासत मिलने और उसे स्वयं अनुभव करने का अंतर स्पष्ट करें।

5(ख). नीचे लिखे प्रश्नों में से किन्हीं दो के उत्तर लगभग 60-60 शब्दों में दीजिए :

'एक है जीवंत दृढ़ता और दूसरा निर्जीव जड़ता।' इस कथन में लेखक ने किनकी ओर संकेत किया है और क्यों ? 'एक था पेड़ और एक था ठूँठ !' पाठ के आधार पर स्पष्ट कीजिए । [4 अंक]

हल:

अवधारणा:

- पेड़ और ठूँठ के माध्यम से लेखक ने दृढ़ता तथा जड़ता का अंतर समझाया है। दोनों का खड़े रहना उनके समान होने का प्रमाण नहीं है।
- जीवन की सच्ची दृढ़ता में अपने आधार पर टिके रहने के साथ परिस्थितियों के अनुसार झुकने और समायोजन करने की क्षमता होती है।

चरण 1: जीवंत दृढ़ता का संकेत पहचानें जीवंत दृढ़ता का संकेत हरे-भरे पेड़ की ओर है। उसकी जड़ें धरती में दृढ़ रहती हैं, लेकिन हवा के झोंकों के साथ उसकी डालियाँ और पत्तियाँ हिलते-झुकते हैं। वह अपने आधार से उखड़े बिना बाहर की गति का साथ देता है। यह लचक उसकी कमजोरी नहीं, उसके जीवित और समर्थ होने का चिह्न है। लेखक इसके माध्यम से बताते हैं कि अपनी मूल शक्ति को बनाए रखते हुए आवश्यक परिवर्तन स्वीकार करना संभव है। इसलिए दृढ़ता को अकड़कर एक ही मुद्रा में बने रहने का पर्याय नहीं मानना चाहिए।

चरण 2: निर्जीव जड़ता और उसका अंतर समझाएँ निर्जीव जड़ता का संकेत सूखे ठूँठ की ओर है। उसमें पेड़ जैसा जीवन, लचक और प्रतिक्रिया करने की क्षमता नहीं रहती। उसका न हिलना किसी जीवंत शक्ति का परिचय नहीं देता; वह निष्प्राण होने के कारण कठोर और

अकड़ा हुआ है। पेड़ की दृढ़ता सक्रिय जीवन से जुड़ी है, जबकि ठूँठ की स्थिरता जीवन के अभाव से। इस तुलना का मानवीय संदेश है कि विवेकपूर्ण समायोजन को दुर्बलता तथा हठपूर्ण अकड़ को साहस नहीं समझना चाहिए। जीवन के लिए अपने आधार के प्रति निष्ठा और परिस्थितियों के प्रति संवेदनशीलता दोनों आवश्यक हैं।

चरण 3: निष्कर्ष जीवंत दृढ़ता का संकेत हरे-भरे पेड़ और निर्जीव जड़ता का संकेत सूखे ठूँठ की ओर है। पेड़ जड़ों से दृढ़ रहकर भी हवा के साथ अपनी डालियाँ झुका लेता है; उसमें जीवन और लचक है। ठूँठ निष्प्राण होने से अकड़ा रहता है। लेखक बताते हैं कि सच्ची दृढ़ता में अनुकूलन की शक्ति होती है, जबकि निष्प्राण अकड़ केवल जड़ता है।

त्वरित सुझाव: तुलना में जड़ों की दृढ़ता और डालियों की लचक साथ लिखें; ठूँठ की अकड़ को साहस या सच्ची दृढ़ता न बताएँ।

5(ग). नीचे लिखे प्रश्नों में से किन्हीं दो के उत्तर लगभग 60-60 शब्दों में दीजिए :

'नीलू' संस्मरण के आधार पर स्पष्ट कीजिए कि नीलू ने 'कुत्ते की मौत मरना', मुहावरे को किस प्रकार झुठला दिया । [4 अंक]

हल:

अवधारणा:

- 'कुत्ते की मौत मरना' मुहावरे का अर्थ उपेक्षित, अपमानजनक अथवा दयनीय दशा में मरना है। इसका अर्थ केवल कुत्ते की मृत्यु होना नहीं है।
- नीलू का प्रसंग मनुष्य और पशु के आत्मीय संबंध को सामने लाता है। प्रेम और सम्मान उसकी मृत्यु को भी गरिमा देते हैं।

चरण 1: मुहावरे की अर्थगत अपेक्षा स्पष्ट करें इस प्रश्न में मुहावरे के प्रचलित अर्थ और नीलू की वास्तविक स्थिति की तुलना करनी है। मुहावरे से ऐसी मृत्यु का बोध होता है जिसमें मरने वाला असहाय और उपेक्षित रह जाए तथा उसके प्रति किसी का अपनापन न दिखाई दे। नीलू कुत्ता अवश्य था, लेकिन इसी कारण उसकी मृत्यु को मुहावरे के अर्थ वाली मृत्यु नहीं कहा जा सकता। संस्मरण में उसकी पहचान एक स्नेहभरे संबंध के सहभागी की है। लेखिका के लिए वह केवल घर में रखा पशु नहीं, अत्यंत आत्मीय प्राणी था।

चरण 2: नीलू की सम्मानपूर्ण विदाई से विरोध दिखाएँ नीलू ने अपनी स्वामिभक्ति और आत्मीय व्यवहार से लेखिका के जीवन में विशेष स्थान बनाया था। जीवन के अंतिम समय में भी वह उस स्नेह और देखभाल से वंचित नहीं हुआ। उसकी मृत्यु पर लेखिका को किसी प्रिय के बिछुड़ने जैसा दुख हुआ और उसे आदरपूर्ण अंतिम विदाई मिली। इस प्रसंग का केंद्र केवल मृत्यु की क्रिया नहीं, उसके आसपास बना अपनापन और सम्मान है। उपेक्षा के स्थान पर शोक, आत्मीयता और सम्मान मिलने से मुहावरे का भाव नीलू पर लागू नहीं होता। उसका स्मरण करना भी बताता है कि वह मरकर भुला दिया गया उपेक्षित प्राणी नहीं था।

चरण 3: निष्कर्ष 'कुत्ते की मौत मरना' का अर्थ उपेक्षित और अपमानजनक मृत्यु है। नीलू ने स्वामिभक्ति और आत्मीयता से लेखिका का गहरा स्नेह पाया। अंतिम समय में भी उसकी देखभाल हुई; उसकी मृत्यु पर लेखिका शोकमग्न हुईं और उसे सम्मानपूर्ण विदाई मिली। वह प्रिय आत्मीय की तरह याद किया गया। इस प्रकार कुत्ता होकर भी नीलू की मृत्यु ने मुहावरे के अर्थ को झुठला दिया।

त्वरित सुझाव: पहले मुहावरे का लाक्षणिक अर्थ लिखें, फिर नीलू को मिली देखभाल, आत्मीय शोक और सम्मानपूर्ण विदाई से उसका विरोध स्पष्ट करें।

6. रामधारी सिंह 'दिनकर' के जीवन, रचनाओं और भाषा-शैली का संक्षिप्त परिचय दीजिए। [6 अंक]

हल:

अवधारणा:

- साहित्यकार के परिचय में जीवन के प्रमुख तथ्य, प्रतिनिधि रचनाएँ तथा भाषा और शैली की विशेषताएँ क्रम से प्रस्तुत की जाती हैं।
- दिनकर के काव्य की पहचान राष्ट्रीय चेतना, अन्याय के प्रति विद्रोह, मानवीय संवेदना और ओजपूर्ण अभिव्यक्ति से होती है।

चरण 1: जीवन और साहित्यिक व्यक्तित्व का परिचय दीजिए रामधारी सिंह 'दिनकर' का जन्म 23 सितंबर 1908 को बिहार के सिमरिया गाँव में हुआ था। उन्होंने पटना विश्वविद्यालय से स्नातक की शिक्षा प्राप्त की। अध्यापन, सरकारी सेवा और राज्यसभा की सदस्यता जैसे दायित्व निभाते हुए भी वे निरंतर साहित्य-साधना में लगे रहे। उनकी कविताओं ने स्वतंत्रता, स्वाभिमान और सामाजिक न्याय की चेतना जगाई। राष्ट्रीय भावनाओं की सशक्त अभिव्यक्ति के कारण वे राष्ट्रकवि के रूप में प्रसिद्ध हुए। उनका निधन 24 अप्रैल 1974 को हुआ।

चरण 2: प्रमुख रचनाओं और उनके विषयों का उल्लेख कीजिए उनकी प्रमुख काव्य-कृतियाँ 'रेणुका', 'हुंकार', 'कुरुक्षेत्र', 'रश्मिरथी', 'उर्वशी' और 'परशुराम की प्रतीक्षा' हैं। 'कुरुक्षेत्र' में युद्ध और शांति की समस्या पर विचार है, जबकि 'रश्मिरथी' में कर्ण के माध्यम से शौर्य, दानशीलता और सामाजिक विषमता के प्रश्न उभरते हैं। 'उर्वशी' में प्रेम और सौंदर्य की अनुभूतियों का चित्रण है। उनकी प्रसिद्ध गद्य-कृति 'संस्कृति के चार अध्याय' भारतीय संस्कृति का विवेचन करती है। 'उर्वशी' के लिए उन्हें ज्ञानपीठ पुरस्कार और 'संस्कृति के चार अध्याय' के लिए साहित्य अकादेमी पुरस्कार मिला।

चरण 3: भाषा और शैली की विशेषताएँ स्पष्ट कीजिए दिनकर की भाषा परिमार्जित खड़ी बोली है। संस्कृत के तत्सम शब्दों के साथ लोकप्रचलित शब्दों के प्रयोग से उसमें गंभीरता और सहजता दोनों आती हैं। उनकी शैली ओजपूर्ण, प्रवाहमयी और प्रभावशाली है। वीर रस तथा राष्ट्रीय चेतना वाले प्रसंगों में ललकार और उत्साह मिलता है, किंतु प्रेम एवं करुणा के प्रसंगों में भाषा कोमल और माधुर्यपूर्ण हो जाती है। उपमा, रूपक, अनुप्रास, सजीव बिंब और पौराणिक प्रतीक उनकी अभिव्यक्ति को समृद्ध करते हैं। वे इतिहास और पुराण की कथाओं को आधुनिक जीवन की समस्याओं से जोड़कर प्रस्तुत करते हैं।

चरण 4: निष्कर्ष दिनकर राष्ट्रीय चेतना और मानवीय संवेदना के प्रमुख कवि हैं। उनकी विविध रचनाओं में ओज, माधुर्य और विचार की गहराई का संतुलित मेल मिलता है।

त्वरित सुझाव: परिचय को जीवन, प्रमुख कृतियाँ और भाषा-शैली के क्रम में लिखें; 'कुरुक्षेत्र' को युद्ध-शांति तथा 'रश्मिरथी' को कर्ण के चरित्र से जोड़ें।

अथवा

6. निर्मल वर्मा के जीवन, रचनाओं और भाषा-शैली का संक्षिप्त परिचय दीजिए। [6 अंक]

हल:

अवधारणा:

- लेखक के संक्षिप्त परिचय में उसके जीवन, साहित्यिक योगदान, प्रमुख कृतियों तथा अभिव्यक्ति की विशिष्टताओं को अलग-अलग स्पष्ट करना चाहिए।
- निर्मल वर्मा नई कहानी के प्रमुख रचनाकार हैं। व्यक्ति का अंतर्जगत, अकेलापन, स्मृति और मानवीय संबंधों की जटिलता उनके लेखन के केंद्रीय विषय हैं।

चरण 1: जीवन और साहित्यिक व्यक्तित्व का परिचय दीजिए निर्मल वर्मा का जन्म 3 अप्रैल 1929 को शिमला में हुआ। उन्होंने दिल्ली विश्वविद्यालय के सेंट स्टीफंस कॉलेज से इतिहास में एम.ए. किया और कुछ समय अध्यापन किया। वे 1959 में प्राग के प्राच्य-विद्या संस्थान के निमंत्रण पर चेकोस्लोवाकिया गए। वहाँ उन्होंने चेक भाषा का अध्ययन और चेक साहित्य का हिंदी में अनुवाद किया। यूरोप के जीवन और संस्कृति के अनुभवों ने उनकी साहित्यिक दृष्टि को विस्तार दिया। वे हिंदी के प्रमुख कथाकार, उपन्यासकार, निबंधकार और यात्रा-वृत्तांत लेखक हैं। उनके साहित्यिक योगदान को ज्ञानपीठ पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

चरण 2: प्रतिनिधि रचनाएँ विधा के अनुसार बताइए 'परिंदे', 'जलती झाड़ी', 'पिछली गर्मियों में' और 'कव्वे और काला पानी' उनके प्रमुख कहानी-संग्रह हैं। 'कव्वे और काला पानी' को साहित्य अकादेमी पुरस्कार प्राप्त हुआ। उनके प्रसिद्ध उपन्यासों में 'वे दिन', 'लाल टीन की छत', 'एक चिथड़ा सुख', 'रात का रिपोर्टर' और 'अंतिम अरण्य' शामिल हैं। 'चीड़ों पर चाँदनी' यात्रा-संस्मरण है। 'शब्द और स्मृति' तथा 'कला का जोखिम' उनके विचारपरक गद्य की महत्वपूर्ण कृतियाँ हैं। इन रचनाओं में व्यक्ति, समाज, संस्कृति और कला के प्रश्नों पर गहरी संवेदनशीलता दिखाई देती है।

चरण 3: भाषा और शैली की विशेषताएँ स्पष्ट कीजिए निर्मल वर्मा की भाषा सहज, सधी हुई, सूक्ष्म और संवेदनशील खड़ी बोली है।

उनकी शैली आत्मीय, मनोविश्लेषणात्मक, सांकेतिक और चित्रात्मक है। वे बाहरी घटनाओं की अपेक्षा पात्रों की स्मृतियों, मनःस्थितियों, अकेलेपन और संबंधों के तनाव को अधिक महत्त्व देते हैं। उनके गद्य में प्रकृति तथा वातावरण का वर्णन पात्रों के अंतर्मन से जुड़ जाता है। बिंब, प्रतीक, छोटे संवाद और अनकहे भाव उनकी कथाओं को अर्थगर्भित बनाते हैं। निबंधों में यही संवेदनशीलता चिंतनशील और विवेचनात्मक रूप ग्रहण करती है। इस प्रकार उनकी अभिव्यक्ति में काव्यात्मकता और वैचारिक गंभीरता का सुंदर समन्वय मिलता है।

चरण 4: निष्कर्ष निर्मल वर्मा ने हिंदी कथा-साहित्य को अंतर्मन की सूक्ष्म अनुभूतियों और आधुनिक जीवन के अकेलेपन की विशिष्ट अभिव्यक्ति दी। उनकी प्रमुख पहचान संवेदनशील कथाकार तथा चिंतनशील गद्यकार की है।

त्वरित सुझाव: रचनाओं को कहानी-संग्रह, उपन्यास और अन्य गद्य में बाँटकर याद करें; भाषा-शैली में अंतर्मन, स्मृति, संकेत और वातावरण के प्रयोग को अवश्य जोड़ें।

7(क). 'विविधा : भाग-2' के आधार पर निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग 40-40 शब्दों में दीजिए :
'सत्यकिरण' एकांकी के आधार पर करूणा देवी की चारित्रिक विशेषताओं का उल्लेख कीजिए। [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- चरित्र-चित्रण में पात्र के कथनों और व्यवहार के आधार पर उसकी प्रवृत्तियाँ स्पष्ट की जाती हैं। करूणा देवी के सार्वजनिक आदर्शों और निजी आचरण के अंतर को पहचानना आवश्यक है।
- 'सत्यकिरण' में समाज-सेवा और प्रतिष्ठा के आवरण में छिपे स्वार्थ तथा दिखावे पर व्यंग्य किया गया है। सत्य सामने आने पर पात्रों की वास्तविकता प्रकट होती है।

चरण 1: समाज-सेवा के पीछे का स्वार्थ पहचानिए करूणा देवी एक धनी सेठ की पत्नी हैं और समाज-सेविका के रूप में प्रतिष्ठित हैं। सत्यकिरण के प्रभाव में वह स्वयं बताती हैं कि समाज-सेवा का काम उन्होंने अपना प्रयोजन सिद्ध करने के लिए अपनाया है। इसके बहाने उन्हें घूमने-फिरने और लोगों से मिलने-जुलने की स्वतंत्रता मिलती है। इस स्वीकारोक्ति से स्पष्ट है कि उनका सार्वजनिक सेवाभाव निजी सुविधा से जुड़ा है। अतः उनके चरित्र की मुख्य विशेषताओं में स्वार्थपरता और दिखावा आते हैं।

चरण 2: कथनी-करनी का अंतर स्पष्ट कीजिए वह घर में पति से झगड़ती हैं, जबकि मंच से पति-भक्ति पर भाषण देती हैं। इस विरोध से उनका दोहरा आचरण प्रकट होता है। समाचार-पत्रों में अपना नाम छपवाने की उनकी इच्छा यश की लालसा दिखाती है। साथ ही वह चाहती हैं कि उनके ऐसे रहस्य सार्वजनिक न हों जिनसे सामाजिक प्रतिष्ठा को क्षति पहुँचे। इसलिए उत्तर में केवल समाज-सेविका कहना पर्याप्त नहीं है; सेवा और प्रतिष्ठा के बाहरी रूप के पीछे छिपे स्वार्थ को भी स्पष्ट करना चाहिए।

चरण 3: निष्कर्ष करूणा देवी धनी सेठ की पत्नी और दिखावटी समाज-सेविका हैं। वह समाज-सेवा को घूमने-मिलने की स्वतंत्रता का साधन बनाती हैं। घर में पति से झगड़कर बाहर पति-भक्ति का उपदेश देती हैं। वह स्वार्थी, यशोलोलुप तथा कथनी-करनी में भिन्नता रखने वाली स्त्री हैं।

त्वरित सुझाव: लगभग 40 शब्दों के उत्तर में समाज-सेवा का स्वार्थ, पति के प्रति दोहरा व्यवहार और यश की लालसा जोड़िए; केवल गुणों की सूची लिखने के बजाय आचरण का छोटा प्रमाण दीजिए।

7(ख). 'विविधा : भाग-2' के आधार पर निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग 40-40 शब्दों में दीजिए :
'एक पत्र' के लेखक के लिए खुदागंज की कोठी में आकर्षण के दो केन्द्र कौनसे थे और क्यों ? [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- आत्मकथात्मक पत्र में बचपन के अनुभवों से लेखक की रुचियों का विकास समझ में आता है।
- इस प्रश्न में दोनों आकर्षणों के नाम और उनके अलग-अलग कारण बताने हैं।

चरण 1: पहले आकर्षण को पहचानिए कोठी के पिछवाड़े का विशाल आँगन लेखक को प्रिय था। पेड़-पौधों, फूलों और लताओं के साथ वहाँ तोते उड़ते और बछड़े खेलते थे। इस जीवंत प्राकृतिक वातावरण से उनके मन में रंगों, सुगंध और फूलों के प्रति प्रेम विकसित हुआ।

चरण 2: दूसरे आकर्षण का कारण समझिए दूसरा आकर्षण हथियारों वाला कमरा था। उसमें तलवारें, बरछियाँ और दूसरे शस्त्र रखे थे, जो बालमन में कौतूहल जगाते थे। वहीं वे नौकरों से डाकुओं और परियों की कहानियाँ सुनते तथा बालपत्रिकाएँ पढ़ते थे। इसलिए यह कमरा रोमांच और कल्पना से जुड़ा था।

चरण 3: स्थान और कारण का संबंध स्पष्ट कीजिए दोनों स्थानों को केवल कोठी के हिस्से बताना पर्याप्त नहीं है। पहले में प्रकृति का प्रत्यक्ष अनुभव है और दूसरे में वस्तुओं तथा कथाओं से मिलने वाला रोमांच। उत्तर लिखते समय आँगन की वस्तुओं की लंबी सूची देने के बजाय उनका भावात्मक प्रभाव बताइए। इसी प्रकार कमरे के लिए हथियारों के साथ कहानी सुनने और पढ़ने का अनुभव भी लिखिए। इससे प्रश्न के 'कौनसे' और 'क्यों' दोनों पक्ष पूरे होते हैं।

चरण 4: निष्कर्ष लेखक के आकर्षण के दो केन्द्र थे—पेड़-पौधों, फूलों, तोतों और बछड़ों वाला पिछला आँगन तथा हथियारों वाला कमरा। आँगन ने प्रकृति, रंग और सुगंध का प्रेम जगाया; कमरे में शस्त्रों का कौतूहल, कहानियाँ सुनने और बालपत्रिकाएँ पढ़ने का आनंद मिलता था।

त्वरित सुझाव: आँगन के साथ प्रकृति-प्रेम और हथियारों के कमरे के साथ कौतूहल तथा कहानियों का आनंद जोड़कर दोनों कारण याद रखिए।

7(ग). 'विविधा : भाग-2' के आधार पर निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग 40-40 शब्दों में दीजिए :
भगिनी निवेदिता के जन्म से पूर्व उनकी माँ ने ईश्वर से क्या प्रार्थना की थी ? वह प्रार्थना किस रूप में पूरी हुई ? [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- इस प्रश्न में माँ की प्रार्थना और निवेदिता के जीवन में उसकी सार्थकता के बीच संबंध स्पष्ट करना है। प्रार्थना का आशय संतान को ईश्वर की सेवा में समर्पित करना था।
- सेवा का अर्थ केवल पूजा करना नहीं है। पीड़ित मनुष्यों की सहायता, शिक्षा का प्रसार और परोपकार भी ईश्वर के प्रति समर्पण के रूप हैं।

चरण 1: माँ के संकल्प को समझिए निवेदिता के जन्म से पहले उनकी माँ ने ईश्वर से प्रार्थना की थी कि यदि संतान का जन्म सकुशल हो जाए, तो वे उसे ईश्वर की सेवा में अर्पित कर देंगी। इसमें जन्म की सुरक्षा की कामना के साथ संतान के भावी जीवन को परोपकार के लिए समर्पित करने का संकल्प भी था। इसलिए उत्तर में केवल संतान की प्राप्ति की इच्छा लिखना पर्याप्त नहीं होगा; समर्पण की प्रतिज्ञा भी स्पष्ट करनी चाहिए।

चरण 2: जीवन से प्रार्थना की पूर्ति का संबंध जोड़िए आगे चलकर मार्गरेट नोबल स्वामी विवेकानंद की शिष्या बनीं और भगिनी निवेदिता के रूप में भारत की सेवा में लग गईं। उन्होंने शिक्षा तथा मानवसेवा को जीवन का लक्ष्य बनाया। इस प्रकार माँ का ईश्वर को संतान अर्पित करने का संकल्प मनुष्यों की निःस्वार्थ सेवा के रूप में पूरा हुआ। उनके नाम में निहित समर्पण का भाव भी इसी जीवन-दृष्टि को व्यक्त करता है। प्रार्थना और उसके फल को अलग-अलग घटनाओं की तरह न लिखकर एक ही आदर्श की निरंतरता के रूप में समझना चाहिए।

चरण 3: निष्कर्ष माँ ने प्रार्थना की थी कि संतान सकुशल जन्मे तो उसे ईश्वर की सेवा में समर्पित करेंगी। निवेदिता ने विवेकानंद की शिष्या बनकर अपना जीवन भारत की शिक्षा और मानवसेवा में अर्पित किया; इस प्रकार माँ की प्रार्थना पूरी हुई।

त्वरित सुझाव: उत्तर को दो हिस्सों में बाँटें: माँ की समर्पण-प्रतिज्ञा और निवेदिता की शिक्षा तथा मानवसेवा द्वारा उसकी पूर्ति।

8(क). प्रत्येक प्रश्न का उत्तर लगभग 30-30 शब्दों में दीजिए :

"किसका मज़ार है यह ?" उसने बड़ी श्रद्धा के साथ उत्तर दिया, — "हमारे पीर का। वो बौत बड़ा बली था।" रानी लक्ष्मीबाई उपन्यास में यह वार्तालाप किन पात्रों के मध्य, किस समय हुआ है ? इसका अभिप्राय स्पष्ट कीजिए। [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- संवाद का अर्थ समझने के लिए वक्ता, श्रोता और घटना की परिस्थिति पहचानना आवश्यक है।
- यहाँ पीर कहकर रानी के प्रति श्रद्धा व्यक्त की गई है और उनकी समाधि की पहचान छिपाई गई है।

चरण 1: पात्रों और प्रसंग को पहचानिए यह वार्तालाप अंग्रेज सैनिकों और गुलमुहम्मद के बीच हुआ। रानी की मृत्यु और दाह-संस्कार के बाद गुलमुहम्मद उनकी समाधि की देखभाल कर रहा था। खोजते हुए वहाँ पहुँचे अंग्रेजों ने उससे उस स्थान के बारे में पूछा।

चरण 2: उत्तर का अभिप्राय समझिए गुलमुहम्मद ने रानी की समाधि को अपने पीर की मजार बताया। इससे वह उसकी वास्तविक पहचान छिपाकर उसे अंग्रेजों द्वारा किए जा सकने वाले अपमान से बचाना चाहता था। रानी उसके लिए अत्यंत पूजनीय थीं; कथन उसकी निष्ठा और श्रद्धा प्रकट करता है।

चरण 3: निष्कर्ष यह संवाद रानी के दाह-संस्कार के बाद अंग्रेज सैनिकों और गुलमुहम्मद में हुआ। उसने रानी की समाधि को पीर की मजार बताकर सुरक्षित रखा; इससे उसकी स्वामिभक्ति और श्रद्धा व्यक्त हुई।

त्वरित सुझाव: उत्तर में क्रम रखें—अंग्रेज सैनिक और गुलमुहम्मद, दाह-संस्कार के बाद का समय, फिर समाधि की रक्षा और श्रद्धा का अभिप्राय।

8(ख). प्रत्येक प्रश्न का उत्तर लगभग 30-30 शब्दों में दीजिए :

"रानी उनमें सर्वश्रेष्ठ पुरुष है" जनरल रोज़ के इस कथन के अभिप्राय को समझाइए। [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- जनरल रोज़ का कथन लक्ष्मीबाई की वीरता और नेतृत्व का मूल्यांकन है। प्रतिद्वंद्वी सेनानायक की प्रशंसा उनकी असाधारण क्षमता को रेखांकित करती है।
- यहाँ 'पुरुष' का प्रयोग पराक्रम और दृढ़ता के अर्थ में हुआ है। कथन को शाब्दिक लिंग-परिवर्तन के अर्थ में नहीं पढ़ना चाहिए।

चरण 1: प्रशंसा का आधार पहचानिए रानी ने अंग्रेजों से संघर्ष में अदम्य साहस, युद्धकौशल और कुशल नेतृत्व का परिचय दिया। कठिन परिस्थितियों में भी वे विचलित नहीं हुईं। उन्होंने सैनिकों का नेतृत्व किया और स्वयं युद्ध में भाग लिया। शत्रुपक्ष का सेनापति होकर भी रोज़ उनकी योग्यता को नकार नहीं सका।

चरण 2: कथन का भाव स्पष्ट कीजिए रोज़ का आशय था कि विद्रोही नेताओं में रानी का पराक्रम और संकल्प सबसे अधिक प्रभावशाली था। 'सर्वश्रेष्ठ' उनकी नेतृत्व-क्षमता और वीरता की सर्वोच्च प्रशंसा है। उत्तर में केवल यह कहना कि रानी बहादुर थीं, अधूरा होगा; शत्रु द्वारा स्वीकार की गई उनकी श्रेष्ठता भी बतानी चाहिए।

चरण 3: निष्कर्ष रोज़ का आशय था कि स्वतंत्रता-संग्राम के नेताओं में लक्ष्मीबाई साहस, युद्धकौशल और दृढ़ नेतृत्व में सर्वश्रेष्ठ थीं। शत्रु होकर भी वह उनके अद्वितीय पराक्रम को स्वीकार करने को विवश था।

त्वरित सुझाव: 'सर्वश्रेष्ठ पुरुष' का भावार्थ बताते समय वीरता, नेतृत्व और शत्रु की स्वीकारोक्ति को साथ रखें।

9. लक्ष्मीबाई की चारित्रिक विशेषताओं का उल्लेख कीजिए। [4 अंक]

हल:

अवधारणा:

- चरित्र-चित्रण में केवल विशेषण गिनाना पर्याप्त नहीं है। पात्र के गुणों को उसके निर्णयों और आचरण से स्पष्ट करना चाहिए। लक्ष्मीबाई के चरित्र का केंद्र स्वतंत्रता, स्वाभिमान और कर्तव्यनिष्ठा है।
- रानी का व्यक्तित्व शौर्य के साथ संगठन, मानवीय संवेदना और त्याग से बनता है। उनके निजी जीवन और सार्वजनिक दायित्वों में राष्ट्र तथा प्रजा के हित को प्रधानता मिलती है।

चरण 1: वीरता और स्वाभिमान स्पष्ट कीजिए लक्ष्मीबाई असाधारण वीरांगना थीं। वे संकट देखकर पीछे हटने के बजाय उसका सामना करती थीं। अंग्रेजों की शक्तिशाली सेना के विरुद्ध संघर्ष में उन्होंने स्वयं सैनिकों का नेतृत्व किया। उनकी वीरता केवल आवेश नहीं, बल्कि स्वतंत्रता की रक्षा का दृढ़ संकल्प थी। झाँसी के अधिकारों की रक्षा के लिए उनका संघर्ष उनके स्वाभिमान और देशप्रेम को प्रकट करता है। वे अन्यायपूर्ण अधीनता स्वीकार नहीं करना चाहती थीं।

चरण 2: नेतृत्व और दूरदर्शिता बताइए रानी कुशल सेनानायिका और संगठनकर्ता थीं। सैनिकों को तैयार करना, उनमें उत्साह जगाना और कठिन समय में उन्हें एक लक्ष्य से बाँधे रखना उनकी नेतृत्व-क्षमता दर्शाता है। वे युद्ध की तैयारी तथा अनुशासन का महत्त्व समझती थीं। झाँसी के बाद भी संघर्ष जारी रखने का उनका निर्णय बताता है कि स्वतंत्रता का उद्देश्य उनके लिए किसी एक स्थान या व्यक्तिगत सुख से बड़ा था। शत्रु सेनापति रोज़ द्वारा उनकी श्रेष्ठता स्वीकार करना भी उनके युद्धकौशल की पुष्टि करता है।

चरण 3: मानवीयता और त्याग का मूल्यांकन कीजिए लक्ष्मीबाई के लिए प्रजा का हित राजकीय दायित्व था। वे सहयोगियों को उनके साहस और निष्ठा से पहचानती थीं; उनके संघर्ष में भिन्न समुदायों के लोग साथ थे। उनका व्यक्तित्व मातृत्व की ममता और शासक के उत्तरदायित्व को जोड़ता है। उन्होंने सुविधापूर्ण निजी जीवन के स्थान पर कठिन संघर्ष चुना और अंत तक अपने उद्देश्य पर अडिग रहीं। उनका बलिदान कर्तव्यनिष्ठा, त्याग और स्वतंत्रता के प्रति अटूट निष्ठा की परिणति है।

चरण 4: निष्कर्ष लक्ष्मीबाई वीर, स्वाभिमानी, देशप्रेमी, दूरदर्शी और कुशल सेनानायिका थीं। प्रजा के प्रति उत्तरदायित्व, सहयोगियों के प्रति विश्वास तथा स्वतंत्रता के लिए सर्वोच्च बलिदान उन्हें आदर्श नेतृत्व का प्रतीक बनाते हैं। उनके चरित्र में दृढ़ संकल्प और मानवीय संवेदना का सुंदर समन्वय है।

त्वरित सुझाव: चरित्र-चित्रण में प्रत्येक गुण के साथ उसका आधार दें: वीरता के साथ युद्ध, नेतृत्व के साथ संगठन और देशप्रेम के साथ त्याग।

अथवा

9. जुही की चारित्रिक विशेषताओं का उल्लेख कीजिए। [4 अंक]

हल:

अवधारणा:

- जुही के चरित्र में कलाप्रियता, कोमल भावनाएँ और वीरता एक साथ दिखाई देती हैं। चरित्र-चित्रण में उसके गुणों का आधार उसके आचरण तथा स्वतंत्रता-संग्राम में उसकी भूमिका है।
- लक्ष्मीबाई की सहयोगिनी जुही व्यक्तिगत सुख से अधिक देश के हित को महत्त्व देती है। उसकी कर्तव्यनिष्ठा और आत्मबलिदान उसके देशप्रेम को स्पष्ट करते हैं।

चरण 1: कलाप्रियता और संवेदनशीलता बताइए जुही सुंदर, आकर्षक और नृत्यकला में निपुण युवती है। उसके व्यक्तित्व में कला की कोमलता और मन की संवेदनशीलता है। वह भावनाशून्य योद्धा नहीं है; उसमें प्रेम और आत्मीयता की भावना भी है। तात्या टोपे के प्रति उसका प्रेम उसके हृदय की कोमलता को प्रकट करता है। फिर भी वह निजी प्रेम को अपने जीवन का एकमात्र उद्देश्य नहीं बनाती। देश और कर्तव्य के प्रति उसका लगाव व्यक्तिगत इच्छाओं से अधिक प्रबल है।

चरण 2: देशप्रेम और निष्ठा स्पष्ट कीजिए जुही लक्ष्मीबाई की विश्वस्त सहयोगिनी है। वह रानी के स्वतंत्रता-संघर्ष को अपना संघर्ष मानती है और उसके लिए संकट उठाने को तैयार रहती है। उसके लिए देशप्रेम केवल कहने की बात नहीं, बल्कि कर्म का विषय है। वह अपनी

योग्यता को राष्ट्रीय कार्य में लगाती है। रानी के प्रति उसका विश्वास, कठिन समय में साथ देना और स्वतंत्रता के उद्देश्य से जुड़े रहना उसकी स्वामिभक्ति तथा कर्तव्यपरायणता को प्रकट करते हैं।

चरण 3: साहस और आत्मबलिदान का मूल्यांकन कीजिए जुही अवसर आने पर युद्धभूमि में अपना पराक्रम दिखाती है। उसका तोप संचालन और शत्रु का सामना करना सिद्ध करता है कि कलाप्रियता के साथ उसमें युद्धकौशल भी है। वह संकट में धैर्य नहीं खोती और भय के कारण कर्तव्य से पीछे नहीं हटती। स्वतंत्रता-संघर्ष में उसका प्राणोत्सर्ग उसके त्याग की चरम परिणति है। इस प्रकार उसके चरित्र में कोमलता दुर्बलता नहीं बनती; वह साहस और दृढ़ संकल्प के साथ जुड़ जाती है।

चरण 4: निष्कर्ष जुही कलानिपुण, संवेदनशील, प्रेममयी, देशभक्त, निष्ठावान और वीर युवती है। निजी सुख से ऊपर कर्तव्य को रखना तथा स्वतंत्रता के लिए बलिदान देना उसे आदर्श सहयोगिनी और साहसी देशसेविका के रूप में प्रतिष्ठित करता है।

त्वरित सुझाव: जुही के चरित्र में दोनों पक्ष जोड़िए: नृत्य और प्रेम से उसकी कोमलता, तथा युद्ध और बलिदान से उसकी वीरता स्पष्ट होती है।

10(क). किन्हीं दो में सन्धि कीजिए :

अधिक + अंश, सत् + आशय, यथा + इष्ट । [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- दो वर्णों के मेल से होने वाले परिवर्तन को संधि कहते हैं। पहले पद के अंतिम और दूसरे पद के प्रथम वर्ण को देखकर नियम लगाना चाहिए।
- स्वर-संधि में स्वरों का मेल बदलता है, जबकि व्यंजन-संधि में व्यंजन बदलता है। प्रश्न में किन्हीं दो का उत्तर अपेक्षित है; यहाँ तीनों दिए गए हैं।

चरण 1: स्वर-संधि वाले पद जोड़िए अधिक + अंश = अधिकांश। यहाँ क में निहित अ और अंश का आरंभिक अ मिलकर आ बनते हैं; यह दीर्घ स्वर-संधि है। यथा + इष्ट = यथेष्ट। यहाँ आ और इ मिलकर ए बनते हैं; यह गुण स्वर-संधि है।

चरण 2: व्यंजन-संधि वाला पद जोड़िए सत् + आशय = सदाशय। स्वर आ के पहले आने पर त् अपने वर्ग के तीसरे वर्ण द् में बदलता है। इसलिए संयुक्त शब्द में दा आता है। यह व्यंजन-संधि है।

चरण 3: निष्कर्ष अधिक + अंश = अधिकांश; सत् + आशय = सदाशय; यथा + इष्ट = यथेष्ट।

त्वरित सुझाव: अधिक में अंतिम क के भीतर अ पहचानिए; यथा में आ के बाद इ होने से गुण-संधि का ए बनता है।

10(ख). किन्हीं दो में सन्धि-विच्छेद कीजिए :

सत्याग्रह, उल्लिखित, अत्याचार । [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- संधि-विच्छेद में संधि से बने संयुक्त शब्द को उसके मूल पदों में अलग किया जाता है। विच्छेद की जाँच के लिए उन पदों की संधि दोबारा करनी चाहिए।
- दीर्घ तथा यण स्वर-संधि में स्वर बदलते हैं। उल्लिखित में व्यंजन-संधि है; वहाँ दोहरे ल के पीछे मूल त् छिपा है।

चरण 1: स्वर-संधि का विच्छेद कीजिए सत्याग्रह = सत्य + आग्रह। सत्य का अंतिम अ और आग्रह का प्रारंभिक आ मिलकर आ बनते हैं; यह दीर्घ संधि है। अत्याचार = अति + आचार। आ से पहले इ का य् हो जाता है; यह यण संधि है।

चरण 2: व्यंजन-संधि का विच्छेद कीजिए उल्लिखित = उत् + लिखित। ल के पहले त् का ल् हो जाने से ल् और ल मिलकर ल्ल बनते

हैं। इसलिए इसका विच्छेद उल् + लिखित नहीं, उत् + लिखित होगा। प्रश्न में किन्हीं दो का उत्तर माँगा गया है; तीनों का सही विच्छेद दिया गया है।

चरण 3: निष्कर्ष सत्याग्रह = सत्य + आग्रह; उल्लिखित = उत् + लिखित; अत्याचार = अति + आचार।

त्वरित सुझाव: अत्याचार का विच्छेद करते समय य् को मूल इ में लौटाइए और उल्लिखित के पहले ल् के स्थान पर त् रखिए।

10(ग). किन्हीं दो पदों का समास-विग्रह कर समास का नाम भी बताइए :

आमरण, महात्मा, आपबीती । [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- समास-विग्रह में सामासिक पद के बीच छूटे संबंधसूचक शब्दों को स्पष्ट करते हैं। समास का नाम केवल शब्द की बनावट से नहीं, उसके अर्थ और प्रधान पद से तय होता है।
- अव्ययीभाव में पूरा पद अव्यय की तरह प्रयुक्त होता है। बहुव्रीहि किसी अन्य व्यक्ति या वस्तु का बोध कराता है, जबकि तत्पुरुष में उत्तरपद प्रधान होता है।

चरण 1: आमरण और महात्मा का विग्रह कीजिए **आमरण:** मरण तक, अर्थात् मृत्यु होने तक। इसका पहला पद आ सीमा का अर्थ देता है और पूरा पद क्रिया की अवधि बताने वाला अव्यय है। अत: इसमें **अव्ययीभाव समास** है।

महात्मा: महान है आत्मा जिसकी, अर्थात् महान आत्मा वाला व्यक्ति। इस प्रचलित अर्थ में पद किसी व्यक्ति का बोध कराता है; इसलिए इसमें **बहुव्रीहि समास** है। केवल महान आत्मा अर्थ लिया जाए तो कर्मधारय होगा, पर यहाँ व्यक्ति के प्रचलित अर्थ में बहुव्रीहि विग्रह उपयुक्त है।

चरण 2: आपबीती का संबंध स्पष्ट कीजिए **आपबीती:** अपने पर बीती हुई घटना। इस विग्रह में पर अधिकरण का चिह्न है, जो सामासिक पद में लुप्त है। इसलिए इसमें **अधिकरण तत्पुरुष समास** है। इसे केवल अपनी कहानी कह देने से पदों के बीच का व्याकरणिक संबंध स्पष्ट नहीं होता। प्रश्न में किन्हीं दो पदों का उत्तर अपेक्षित है; यहाँ तीनों के विग्रह और भेद दिए गए हैं।

चरण 3: निष्कर्ष आमरण = मरण तक, अव्ययीभाव; महात्मा = महान है आत्मा जिसकी, बहुव्रीहि; आपबीती = अपने पर बीती, अधिकरण तत्पुरुष।

त्वरित सुझाव: विग्रह के संकेत याद रखिए: आमरण में तक, महात्मा में जिसकी और आपबीती में पर उसके समास-भेद की पहचान कराते हैं।

11(क). नीचे लिखे वाक्यों में से किन्हीं दो के शुद्ध रूप लिखिए :

(i) मैं आप सबों का स्वागत करता हूँ ।

(ii) पशु को काटकर चारा खिलाओ ।

(iii) आप चलो, मैं आया । [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- वाक्य-शुद्धि में सर्वनाम के सही रूप, पदों के क्रम और क्रिया के उचित काल तथा आदरसूचक रूप पर ध्यान देना चाहिए। सुधार करते समय मूल आशय सुरक्षित रखा जाता है।
- शब्दों का गलत क्रम अर्थ बदल सकता है। क्रिया के निकट उसी वस्तु को रखना चाहिए जिस पर वह क्रिया हो रही है। प्रश्न के तीनों वाक्यों के शुद्ध रूप नीचे दिए गए हैं।

चरण 1: सर्वनाम और पदक्रम सुधारिए **(i) मैं आप सबका स्वागत करता हूँ।** मूल वाक्य में सबों का रूप अशुद्ध है। यहाँ सब के साथ का जुड़कर सबका बनेगा; आप पहले से उपस्थित है, इसलिए संबोधन का आदर बना रहता है।

(ii) चारा काटकर पशु को खिलाओ। काटने की क्रिया चारे पर होनी है, पशु पर नहीं। मूल वाक्य का क्रम पशु को काटने का गलत अर्थ देता है। चारा को काटकर से पहले रखने पर आशय स्पष्ट हो जाता है।

चरण 2: आदर और काल के अनुसार क्रिया लिखिए **(iii) आप चलिए, मैं आता हूँ।** आप के साथ आदरसूचक आज्ञार्थक क्रिया चलिए चाहिए; चलो तुम के साथ प्रयुक्त होता है। वक्ता अभी आने वाला है, इसलिए यहाँ मैं आया के बदले मैं आता हूँ स्वाभाविक और उपयुक्त रूप है। दोनों सुधार आवश्यक हैं, क्योंकि पहले खंड में आदर का और दूसरे में क्रिया के समय का दोष है।

चरण 3: निष्कर्ष (i) मैं आप सबका स्वागत करता हूँ।

(ii) चारा काटकर पशु को खिलाओ।

(iii) आप चलिए, मैं आता हूँ।

त्वरित सुझाव: पहले सबका का सर्वनाम-रूप, फिर काटने का कर्म चारा और अंत में आप के साथ चलिए का मेल जाँचिए।

11(ख). नीचे लिखे वाक्य में यथास्थान सही विराम-चिह्न लगाइए :

पिताजी जो मेहनत करता है क्या वही सफल होता है मैंने पूछा [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- विराम-चिह्न वाक्य का अर्थ, ठहराव और कथन का प्रकार स्पष्ट करते हैं। प्रत्यक्ष कथन में बोले गए शब्द उद्धरण-चिह्नों में रखे जाते हैं। प्रश्न के अंत में प्रश्नवाचक चिह्न आता है।
- संबोधन के बाद छोटा ठहराव दिखाने के लिए अल्पविराम लगाते हैं। यहाँ पिताजी संबोधन है और मैंने पूछा कथन का परिचय देने वाला अंश है, जो उद्धरण के बाहर रहेगा।

चरण 1: संबोधन और प्रश्न की सीमा पहचानिए पिताजी के बाद अल्पविराम लगेगा, क्योंकि वक्ता अपने पिता को संबोधित कर रहा है। जो मेहनत करता है उपवाक्य के बाद भी अल्पविराम लगाने से उसके बाद आने वाले क्या वही सफल होता है प्रश्न का संबंध साफ होता है। होता है के बाद प्रश्नवाचक चिह्न लगेगा, क्योंकि वहीं पूछी गई बात पूरी होती है।

चरण 2: उद्धरण और कथन का समापन कीजिए पिता से कहे गए पूरे प्रश्न को उद्धरण-चिह्नों के भीतर रखना है। आरंभिक उद्धरण पिताजी से पहले और अंतिम उद्धरण प्रश्नवाचक चिह्न के बाद आएगा। मैंने पूछा कथावाचक का अपना वर्णन है, इसलिए इसे उद्धरण में नहीं रखेंगे। इस वर्णन के अंत में पूर्ण विराम लगेगा। प्रश्नवाचक चिह्न के साथ अतिरिक्त पूर्ण विराम लगाने की आवश्यकता नहीं है।

चरण 3: निष्कर्ष "पिताजी, जो मेहनत करता है, क्या वही सफल होता है?" मैंने पूछा।

त्वरित सुझाव: पहले बोले गए प्रश्न को उद्धरण में बाँधिए; फिर संबोधन पर अल्पविराम, प्रश्न पर ? और मैंने पूछा के बाद पूर्ण विराम लगाइए।

12. प्रस्तुत अनुच्छेद को पढ़कर नीचे लिखे प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

समाज में जो लोग आज यह मानकर आचरण कर रहे हैं कि पुलिस से छिपकर जो कुछ भी किया जाता है, वह पाप नहीं होता । वे सभी लोग परले दरजे के नास्तिक हैं, क्योंकि उनकी दृष्टि में केवल लोक सत्य है, परलोक झूठा है। आदमी जब यह मानकर चलता है कि ज़िन्दगी मृत्यु के साथ खत्म नहीं होती, वह मृत्यु के बाद भी कायम रहती है, तब उसके आचरण कुछ और ही प्रकार के होते हैं। सच्चे आस्तिकों की जिस समाज में अधिकता होगी, उस समाज में पुलिस की ज़रूरत कम पड़ेगी और चूँकि आदमी आदमी को हर जायज अधिकार खुद दे दिया करेगा, इसलिए उस समाज में जजों और मजिस्ट्रेटों की तादाद भी थोड़ी ही रहेगी। अच्छा समाज वह है, जिसमें कानून कम होते हैं और कानून मनवाने वाली फौज भी छोटी होती है। [4 अंक]

12(क). उपर्युक्त गद्यांश का उपयुक्त शीर्षक दीजिए। [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- शीर्षक गद्यांश के केंद्रीय विचार को थोड़े शब्दों में व्यक्त करता है। वह किसी एक उदाहरण तक सीमित नहीं होना चाहिए।
- यहाँ लेखक ने सच्ची आस्तिकता, नैतिक आचरण और अच्छे समाज के परस्पर संबंध को स्पष्ट किया है।

चरण 1: केंद्रीय विचार पहचानिए गद्यांश में पुलिस से छिपकर गलत काम करने वालों की मानसिकता की आलोचना की गई है। इसके विपरीत सच्चे आस्तिकों वाला समाज दूसरों के जायज अधिकारों का सम्मान करता है और उसे बाहरी नियंत्रण की कम आवश्यकता होती है।

चरण 2: शीर्षक का आधार निर्धारित कीजिए पुलिस, जज और कानून का उल्लेख अच्छे समाज की पहचान समझाने के लिए आया है। इसलिए शीर्षक में केवल पुलिस का उल्लेख करने के स्थान पर आस्तिकता और सामाजिक सदाचरण का संबंध सामने आना चाहिए।

चरण 3: निष्कर्ष उपयुक्त शीर्षक है—"सच्ची आस्तिकता और आदर्श समाज"।

त्वरित सुझाव: शीर्षक चुनते समय आरंभ की आलोचना और अंतिम वाक्य की समाज-संबंधी कसौटी को जोड़कर केंद्रीय विचार पहचानिए।

12(ख). कैसे लोगों को नास्तिक कहा गया है ? [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- बोध प्रश्न का उत्तर गद्यांश में दिए गए अर्थ और संदर्भ के आधार पर देना चाहिए।
- यहाँ नास्तिक शब्द का प्रयोग उन लोगों के लिए हुआ है जो नैतिक दायित्व को केवल पुलिस से बचने तक सीमित मानते हैं।

चरण 1: संबंधित कथन खोजिए आरंभ में लेखक उन लोगों की चर्चा करता है जो यह मानते हैं कि पुलिस से छिपकर किया गया कोई भी काम पाप नहीं होता। इसी मानसिकता वाले लोगों को वह परले दरजे का नास्तिक कहता है।

चरण 2: उनके विश्वास का आधार समझिए गद्यांश के अनुसार उनकी दृष्टि में केवल लोक सत्य है और परलोक झूठा है। इसलिए वे अपने आचरण का मूल्यांकन उसके नैतिक स्वरूप से नहीं, बल्कि पुलिस की पकड़ में आने या उससे बच जाने के आधार पर करते हैं।

चरण 3: निष्कर्ष जो लोग पुलिस से छिपकर किए गए अनुचित कार्य को पाप नहीं मानते और केवल लोक को सत्य तथा परलोक को झूठा समझते हैं, उन्हें नास्तिक कहा गया है।

त्वरित सुझाव: "कैसे लोगों" का उत्तर देते समय उनके आचरण के साथ गद्यांश में बताई गई उनकी मान्यता भी लिखिए।

12(ग). पुलिस और जजों की जरूरत कहाँ कम होती है ? [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- प्रश्न में पूछी गई परिस्थिति पहचानकर उसका कारण भी गद्यांश से जोड़ना चाहिए।
- लेखक के अनुसार सच्ची आस्तिकता मनुष्य के आचरण को नियंत्रित करती है और दूसरों के अधिकारों का सम्मान करना सिखाती है।

चरण 1: समाज की विशेषता पहचानिए गद्यांश में स्पष्ट कहा गया है कि जिस समाज में सच्चे आस्तिकों की अधिकता होगी, उसमें पुलिस की आवश्यकता कम पड़ेगी। ऐसे लोग पुलिस की निगरानी से स्वतंत्र होकर भी अपने नैतिक दायित्व को समझते हैं।

चरण 2: न्यायाधीशों की कम आवश्यकता का कारण जोड़िए लेखक आगे बताता है कि उस समाज में प्रत्येक व्यक्ति दूसरे व्यक्ति को उसका हर जायज अधिकार स्वयं दे देगा। अधिकार प्राप्त करने के लिए न्यायालय का सहारा कम लेना पड़ेगा, इसलिए जजों और मजिस्ट्रेटों की संख्या भी कम रहेगी।

चरण 3: निष्कर्ष जिस समाज में सच्चे आस्तिक अधिक हों और लोग दूसरों को उनके जायज अधिकार स्वयं दे दें, वहाँ पुलिस और जजों की जरूरत कम होती है।

त्वरित सुझाव: पुलिस और जजों को एक साथ पूछने पर सच्ची आस्तिकता तथा दूसरों के अधिकार देने—दोनों बातों को उत्तर में जोड़िए।

12(घ). कौनसा समाज अच्छा माना जाता है ? [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- किसी परिभाषा या कसौटी से संबंधित प्रश्न का उत्तर गद्यांश के स्पष्ट कथन के अनुसार देना चाहिए।
- लेखक अच्छे समाज की पहचान उसके सदाचरण से करता है, जिसके कारण कठोर बाहरी नियंत्रण की आवश्यकता घट जाती है।

चरण 1: अंतिम वाक्य की कसौटी पढ़िए गद्यांश का अंतिम वाक्य बताता है कि अच्छे समाज में कानून कम होते हैं और कानून मनवाने वाली फौज भी छोटी होती है। ये दोनों विशेषताएँ लेखक ने एक साथ बताई हैं।

चरण 2: कसौटी का आशय स्पष्ट कीजिए इससे पहले के कथन में लोग दूसरों के जायज अधिकार स्वयं देते हैं। अतः कम कानून होने का अर्थ अनुशासन का अभाव नहीं है; आशय यह है कि लोगों के अच्छे आचरण के कारण उन्हें नियंत्रण में रखने के लिए बड़ी व्यवस्था की जरूरत नहीं पड़ती।

चरण 3: निष्कर्ष वह समाज अच्छा माना जाता है जिसमें कानून कम हों और कानून मनवाने वाली फौज भी छोटी हो, क्योंकि लोग स्वयं नैतिक आचरण करते हों।

त्वरित सुझाव: अच्छे समाज की पहचान लिखते समय "कम कानून" और "छोटी कानून-पालक फौज"—दोनों कसौटियाँ अवश्य शामिल कीजिए।

13. गाँवों से शहरों की ओर युवा पीढ़ी के पलायन की समस्या की ओर ध्यान आकृष्ट करते हुए संपादक, राजस्थान पत्रिका, जयपुर को पत्र लिखिए। [5 अंक]

हल:

अवधारणा:

- संपादक को लिखा गया पत्र जनसमस्या की ओर समाज और प्रशासन का ध्यान खींचता है। भाषा शिष्ट, स्पष्ट और तथ्यपरक होनी चाहिए।

- औपचारिक पत्र में प्रेषक का पता, दिनांक, प्राप्तकर्ता का पद और पता, विषय, संबोधन, मुख्य कथ्य, समापन तथा नाम क्रम से लिखे जाते हैं।
- युवा पीढ़ी के पलायन पर पत्र में उसके कारण, गाँव और शहर पर पड़ने वाले प्रभाव तथा ग्रामीण अवसर बढ़ाने के उपाय रखने चाहिए।

चरण 1: पत्र का प्रारूप निर्धारित कीजिए पत्र राजस्थान पत्रिका, जयपुर के संपादक को संबोधित होगा। विषय पंक्ति में गाँवों से शहरों की ओर युवाओं का पलायन स्पष्ट लिखा जाएगा। आरंभ में समाचारपत्र के माध्यम से ध्यान आकृष्ट करने का उद्देश्य और अंत में विषय प्रकाशित करने का विनम्र अनुरोध रखा जाएगा।

चरण 2: सामग्री की योजना बनाइए कारणों में स्थानीय रोजगार की कमी, बेहतर शिक्षा तथा स्वास्थ्य सुविधाओं की आवश्यकता रखिए। प्रभावों में गाँवों में श्रम और युवाशक्ति की कमी तथा शहरों में आवास और सुविधाओं पर बढ़ता दबाव बताइए। समाधान के लिए ग्रामीण उद्योग, कौशल प्रशिक्षण, कृषि आधारित व्यवसाय और मूलभूत सुविधाओं का विकास सुझाइए। समस्या का केंद्र मजबूरी में होने वाला पलायन रहे।

चरण 3: पूरा पत्र लिखिए ग्राम रामपुर, जिला जयपुर

राजस्थान

10 मार्च 2004

सेवा में,

संपादक महोदय,

राजस्थान पत्रिका,

जयपुर।

विषय: गाँवों से शहरों की ओर युवा पीढ़ी के पलायन की समस्या।

महोदय,

आपके लोकप्रिय समाचारपत्र के माध्यम से मैं शासन और समाज का ध्यान गाँवों से शहरों की ओर युवा पीढ़ी के पलायन की समस्या की ओर आकृष्ट करना चाहता हूँ। गाँवों में पर्याप्त रोजगार, उच्च शिक्षा और स्वास्थ्य सुविधाओं का अभाव युवाओं को अपना घर छोड़ने के लिए विवश करता है। खेती से अनिश्चित आय भी इस स्थिति को बढ़ाती है।

युवाओं के चले जाने से गाँवों में कृषि और स्थानीय व्यवसायों के लिए श्रमिकों की कमी होती है। अनेक परिवारों में वृद्ध लोग अकेले रह जाते हैं। दूसरी ओर शहरों में आवास, परिवहन, पानी और रोजगार की उपलब्धता पर दबाव बढ़ता है। पर्याप्त तैयारी और कौशल के बिना पहुँचने वाले युवाओं को असुरक्षित काम और कठिन जीवन-स्थितियों का सामना भी करना पड़ता है।

इस समस्या के समाधान के लिए गाँवों में कुटीर उद्योग, कृषि उत्पादों के प्रसंस्करण केंद्र और कौशल प्रशिक्षण की व्यवस्था बढ़ाई जानी चाहिए। स्वरोजगार के लिए सुलभ ऋण, बेहतर सिंचाई और उपज के उचित विपणन की सुविधाएँ भी आवश्यक हैं। विद्यालयों, स्वास्थ्य केंद्रों, सड़कों और बिजली की स्थिति सुधरने पर युवाओं को अपने क्षेत्र में आगे बढ़ने के अवसर मिलेंगे।

कृपया इस विषय पर अपने समाचारपत्र में सामग्री प्रकाशित करके संबंधित अधिकारियों का ध्यान आकृष्ट करें, ताकि ग्रामीण युवाओं को मजबूरी में पलायन न करना पड़े।

धन्यवाद।

भवदीय,

अभय कुमार

चरण 4: निष्कर्ष पत्र में पलायन के कारण, उसके सामाजिक प्रभाव और व्यावहारिक उपाय प्रस्तुत करते हुए राजस्थान पत्रिका के संपादक से समस्या को प्रकाशित करने का अनुरोध किया गया है।

त्वरित सुझाव: संपादक को पत्र में विषय पंक्ति स्पष्ट रखिए और मुख्य कथ्य को समस्या, प्रभाव तथा समाधान के क्रम में लिखकर प्रकाशन का अनुरोध कीजिए।

अथवा

13. अपने नगर के महापौर के नाम पत्र लिखकर नगर में अनियमित एवं अपर्याप्त जल-वितरण से होने वाली असुविधाओं के प्रति उनका ध्यान आकृष्ट कीजिए। [5 अंक]

हल:

अवधारणा:

- औपचारिक शिकायत-पत्र में समस्या, उससे उत्पन्न कठिनाइयाँ और अपेक्षित कार्रवाई स्पष्ट तथा विनम्र भाषा में लिखी जाती है।
- प्रेषक का पता, दिनांक, प्राप्तकर्ता का पद-पता, विषय, संबोधन, मुख्य विषय और समापन पत्र के आवश्यक अंग हैं।

चरण 1: पत्र का प्रारूप निर्धारित करें यह पत्र नगर के महापौर को लिखा जाना है। विषय में अनियमित तथा अपर्याप्त जल-वितरण का स्पष्ट उल्लेख करें। मुख्य भाग में नागरिकों की समस्या और उसके व्यावहारिक समाधान रखें। नाम और पते के लिए एक नमूना स्थानीय विवरण दिया गया है।

चरण 2: विषयवस्तु की योजना बनाएँ पहले जलापूर्ति के अनिश्चित समय और कम मात्रा का उल्लेख करें। फिर पेयजल, भोजन बनाने, सफाई तथा बच्चों और कामकाजी लोगों की दिनचर्या पर प्रभाव बताएँ। अंत में निर्धारित समय पर पर्याप्त जलापूर्ति, पाइपों की मरम्मत, समान वितरण और अंतरिम टैंकर व्यवस्था का अनुरोध करें।

चरण 3: पूरा नमूना पत्र लिखें 24, शांति नगर

जयपुर

20 मार्च, 2004

सेवा में,

महापौर महोदय

नगर निगम, जयपुर

विषय: अनियमित एवं अपर्याप्त जल-वितरण से होने वाली असुविधाओं के संबंध में।

महोदय,

मैं आपके नगर का निवासी हूँ और नगर में अनियमित तथा अपर्याप्त जल-वितरण की समस्या की ओर आपका ध्यान आकृष्ट करना चाहता हूँ। पिछले कई सप्ताह से जलापूर्ति का कोई निश्चित समय नहीं है। कभी सुबह थोड़ी देर पानी आता है, तो कभी पूरे दिन नल सूखे रहते हैं। कम दबाव के कारण ऊपरी मंजिलों और वितरण-व्यवस्था के अंतिम छोर पर स्थित घरों तक पानी नहीं पहुँच पाता।

इस स्थिति से नागरिकों को पीने का पानी जुटाने, भोजन बनाने और सफाई रखने में कठिनाई हो रही है। लोगों को दूर स्थित सार्वजनिक नलों पर लंबी कतारों में खड़ा होना पड़ता है अथवा महँगे दामों पर पानी खरीदना पड़ता है। पानी की प्रतीक्षा में विद्यार्थियों और कामकाजी लोगों की दिनचर्या भी प्रभावित हो रही है। आर्थिक रूप से कमजोर परिवारों की परेशानी विशेष रूप से गंभीर है।

अत: आपसे अनुरोध है कि जलापूर्ति का निश्चित समय घोषित करके उसका पालन सुनिश्चित कराएँ। रिसाव वाली पाइपलाइनों की मरम्मत, अवैध कनेक्शनों की जाँच और सभी क्षेत्रों में समान वितरण की व्यवस्था की जाए। स्थायी सुधार होने तक प्रभावित बस्तियों में सार्वजनिक टैंकर भेजे जाएँ तथा शिकायतें दर्ज करने की व्यवस्था उपलब्ध कराई जाए।

आशा है, आप इस आवश्यक नागरिक सुविधा को प्राथमिकता देते हुए शीघ्र कार्रवाई करेंगे।

धन्यवाद।

भवदीय

अमित कुमार

नगरवासी

चरण 4: निष्कर्ष इस पत्र में जल-वितरण की समस्या, नागरिक जीवन पर उसके प्रभाव और महापौर से अपेक्षित सुधारों को औपचारिक एवं विनम्र ढंग से प्रस्तुत किया गया है।

त्वरित सुझाव: विषय-पंक्ति में जल-वितरण की समस्या लिखें; मुख्य भाग को समस्या, असुविधा और कार्रवाई के अनुरोध के क्रम में रखें।

14(क). निम्नलिखित विषयों में से किसी एक विषय पर लगभग 300 शब्दों में निबन्ध लिखिए :

राजनीति और भ्रष्टाचार [10 अंक]

हल:

अवधारणा:

- विचारप्रधान निबंध में विषय का अर्थ, समस्या के कारण, प्रभाव और समाधान क्रमबद्ध रूप में प्रस्तुत किए जाते हैं।
- राजनीति और भ्रष्टाचार का संबंध समझाते समय जनसेवा, सार्वजनिक उत्तरदायित्व तथा नागरिक चेतना को केंद्र में रखना चाहिए।

चरण 1: विचारों की रूपरेखा बनाएँ भूमिका में राजनीति का जनकल्याणकारी उद्देश्य और भ्रष्टाचार का अर्थ स्पष्ट करें। इसके बाद चुनावी खर्च, अपारदर्शिता और संरक्षण जैसे कारण बताएँ। मुख्य विवेचन में सार्वजनिक संसाधनों तथा नागरिक विश्वास पर प्रभाव दिखाएँ। उपायों में पारदर्शिता, निष्पक्ष जाँच और मतदाता की जिम्मेदारी रखें।

चरण 2: भाषा और क्रम तय करें निबंध का उपयुक्त शीर्षक दें और लगभग 300 शब्दों में परस्पर जुड़े अनुच्छेद लिखें। बिना प्रमाण किसी व्यक्ति पर आरोप लगाने के बजाय समस्या का विवेचन करें। अंतिम अनुच्छेद में ईमानदार जनजीवन तथा सेवा-भाव की आवश्यकता का सकारात्मक संदेश दें।

चरण 3: पूरा नमूना निबंध लिखें **राजनीति और भ्रष्टाचार**

राजनीति का उद्देश्य समाज को दिशा देना और जनकल्याण सुनिश्चित करना है। लोकतंत्र में जनता अपने प्रतिनिधियों को विश्वास के साथ शासन की जिम्मेदारी सौंपती है। जब इस अधिकार का उपयोग निजी लाभ, परिवार या दल के अनुचित हितों के लिए होने लगता है, तब राजनीति में भ्रष्टाचार प्रवेश करता है। यह केवल धन का दुरुपयोग नहीं, सार्वजनिक विश्वास के साथ अन्याय भी है।

चुनावों में अनियंत्रित खर्च, सत्ता पाने की लालसा, अपारदर्शी चंदा और उत्तरदायित्व की कमी इस समस्या को बढ़ाते हैं। ठेकों में पक्षपात, नियुक्तियों में भाई-भतीजावाद तथा सरकारी सुविधाओं का निजी उपयोग इसके रूप हैं। जब गलत काम करने वाले प्रभावशाली लोगों को संरक्षण मिलता है, तो ईमानदार व्यक्तियों का उत्साह घटता है और भ्रष्ट आचरण सामान्य लगने लगता है।

इसका सबसे गंभीर प्रभाव साधारण नागरिक पर पड़ता है। विकास के लिए निर्धारित संसाधन जरूरतमंदों तक नहीं पहुँचते। विद्यालयों, अस्पतालों, सड़कों और पेयजल जैसी आवश्यक सुविधाओं की गुणवत्ता प्रभावित होती है। गरीब व्यक्ति को अपने अधिकार पाने के लिए भी सिफारिश खोजनी पड़ती है। प्रशासन की निष्पक्षता पर संदेह बढ़ता है और लोकतांत्रिक संस्थाओं के प्रति जनता का विश्वास कमजोर होता है।

समाधान के लिए राजनीतिक इच्छाशक्ति और नागरिक जागरूकता दोनों आवश्यक हैं। चुनावी आय-व्यय का स्पष्ट विवरण, सार्वजनिक खरीद में खुली प्रक्रिया, स्वतंत्र जाँच और समयबद्ध कार्रवाई भ्रष्टाचार के अवसर कम कर सकती है। जनप्रतिनिधियों तथा अधिकारियों को अपने निर्णयों के लिए उत्तरदायी बनाया जाना चाहिए। शिकायत करने वालों को संरक्षण मिले और जनता को सरकारी योजनाओं की जानकारी सुलभ हो। राजनीतिक दलों को भी ईमानदार उम्मीदवारों और आंतरिक अनुशासन को महत्त्व देना चाहिए।

नागरिकों की भूमिका मतदान तक सीमित नहीं है। हमें जाति, भय या प्रलोभन के बजाय उम्मीदवार के चरित्र और कार्य को परखना चाहिए। अपने जीवन में भी अनुचित लाभ का विरोध करना होगा। स्वच्छ राजनीति तभी संभव है, जब सत्ता सेवा बने और समाज ईमानदारी को सम्मान दे।

चरण 4: निष्कर्ष राजनीतिक भ्रष्टाचार सार्वजनिक संसाधनों और लोकतांत्रिक विश्वास को क्षति पहुँचाता है; उत्तरदायी शासन और सजग नागरिक मिलकर स्वच्छ राजनीति की दिशा में काम कर सकते हैं।

त्वरित सुझाव: इस विषय में कारण, नागरिकों पर प्रभाव और ठोस उपाय अलग अनुच्छेदों में रखें; केवल नेताओं की आलोचना करके निबंध समाप्त न करें।

14(ख). निम्नलिखित विषयों में से किसी एक विषय पर लगभग 300 शब्दों में निबन्ध लिखिए :

पढ़ा-लिखा युवा वर्ग और बेकारी [10 अंक]

हल:

अवधारणा:

- समस्यापरक निबंध में समस्या का परिचय, उसके सामाजिक और आर्थिक कारण, प्रभाव तथा व्यावहारिक समाधान दिए जाते हैं।
- शिक्षित बेरोजगारी के विवेचन में शिक्षा, कौशल और रोजगार के अवसरों के बीच संबंध को संतुलित दृष्टि से समझना आवश्यक है।

चरण 1: विषय की रूपरेखा बनाएँ भूमिका में युवाओं की क्षमता और शिक्षित बेरोजगारी का विरोधाभास रखें। मुख्य भाग में अवसरों की कमी, व्यावहारिक प्रशिक्षण का अभाव, सीमित रोजगार-धारणा और क्षेत्रीय असमानता जैसे कारण लें। फिर व्यक्ति, परिवार और समाज पर प्रभाव समझाएँ। समाधान में प्रशिक्षण, रोजगार-सृजन, स्वरोजगार तथा निष्पक्ष भर्ती को शामिल करें।

चरण 2: प्रस्तुति की योजना बनाएँ लगभग 300 शब्दों में शीर्षक सहित निबंध लिखें। हर अनुच्छेद एक प्रमुख पक्ष स्पष्ट करे और अगले पक्ष से जुड़े। युवाओं को दोषी ठहराने या अप्रमाणित आँकड़े देने के बजाय संस्था, समाज और व्यक्ति की संयुक्त भूमिका बताएँ। अंत में शिक्षा को सार्थक रोजगार से जोड़ने का सकारात्मक निष्कर्ष रखें।

चरण 3: पूरा नमूना निबंध लिखें **पढ़ा-लिखा युवा वर्ग और बेकारी**

युवा किसी भी देश की ऊर्जा और भविष्य का आधार होते हैं। शिक्षा से उनकी क्षमताएँ विकसित होती हैं और बेहतर जीवन की आशा जगती है। किंतु पढ़ाई पूरी करने के बाद भी उपयुक्त काम न मिलना गंभीर समस्या है। पढ़े-लिखे युवाओं की बेकारी केवल व्यक्तिगत कठिनाई नहीं, राष्ट्रीय संसाधनों और प्रतिभा की हानि भी है।

इस स्थिति के अनेक कारण हैं। रोजगार चाहने वालों की संख्या की तुलना में अवसर कम पड़ जाते हैं। कई बार शिक्षा का स्वरूप पुस्तकीय रहता है और कार्यक्षेत्र की आवश्यकताओं से उसका पर्याप्त संबंध नहीं बन पाता। व्यावहारिक प्रशिक्षण, संचार-कौशल और रोजगार संबंधी मार्गदर्शन की कमी भी बाधा बनती है। केवल सरकारी नौकरी को सम्मानजनक मानने की धारणा विकल्पों को सीमित करती है। साथ ही क्षेत्रीय असमानता के कारण छोटे नगरों और गाँवों के युवाओं को पर्याप्त अवसर नहीं मिलते।

लंबे समय तक बेकार रहने से आत्मविश्वास घटता है और आर्थिक निर्भरता बढ़ती है। परिवार पर बोझ पड़ता है तथा युवाओं में निराशा और असंतोष उत्पन्न हो सकता है। काम की तलाश में बड़े नगरों की ओर पलायन भी बढ़ता है। योग्यता के अनुरूप काम न मिलना प्रतिभा का अधूरा उपयोग है। इसलिए समस्या का दोष केवल युवाओं पर डालना उचित नहीं है।

समाधान के लिए शिक्षा और रोजगार के बीच मजबूत संबंध आवश्यक है। विद्यालयों तथा महाविद्यालयों में व्यावसायिक प्रशिक्षण, प्रशिक्षुता और स्थानीय उद्योगों से संपर्क बढ़ाया जाए। लघु उद्योग, कृषि आधारित उद्यम और सेवा क्षेत्र नए अवसर दे सकते हैं। स्वरोजगार के इच्छुक युवाओं को प्रशिक्षण, उचित ऋण तथा बाजार की जानकारी मिले। भर्ती प्रक्रियाएँ निष्पक्ष, पारदर्शी और समयबद्ध हों। ग्रामीण क्षेत्रों में बुनियादी सुविधाएँ बढ़ने से रोजगार का विकेंद्रीकरण भी होगा।

युवाओं को बदलती आवश्यकताओं के अनुसार सीखते रहना और श्रम की गरिमा स्वीकार करना चाहिए। सरकार, शिक्षण संस्थानों और उद्योगों का समन्वित प्रयास ही शिक्षा को सार्थक अवसरों से जोड़ सकता है। सक्षम युवा राष्ट्र की प्रगति के सक्रिय सहभागी बनेंगे।

चरण 4: निष्कर्ष शिक्षित बेकारी का समाधान गुणवत्तापूर्ण प्रशिक्षण, व्यापक रोजगार-अवसर, निष्पक्ष भर्ती और युवाओं की निरंतर सीखने की तत्परता के संयुक्त प्रयास में है।

त्वरित सुझाव: बेकारी पर लिखते समय अवसरों की कमी और कौशल की कमी में अंतर बताएँ; समाधान में सरकार, शिक्षण संस्थानों और युवाओं की भूमिका शामिल करें।

14(ग). निम्नलिखित विषयों में से किसी एक विषय पर लगभग 300 शब्दों में निबन्ध लिखिए :

अनेकता में एकता : भारत की विशेषता [10 अंक]

हल:

अवधारणा:

- विचारप्रधान निबन्ध में भूमिका, विषय का क्रमिक विस्तार और सार्थक उपसंहार होता है। विविधता के उदाहरणों को राष्ट्रीय एकता के केंद्रीय विचार से जोड़ना चाहिए।
- अनेकता में एकता का अर्थ भाषाओं, धर्मों और संस्कृतियों के भेद मिटाना नहीं, बल्कि उनका सम्मान करते हुए समान नागरिकता और साझा उत्तरदायित्व निभाना है।

चरण 1: विषय की रूपरेखा बनाइए पहले भारत की भौगोलिक और सांस्कृतिक विविधता का परिचय दीजिए। फिर साझा इतिहास, संविधान और सामाजिक सहयोग से बनने वाली एकता समझाइए। अगले अनुच्छेद में संकीर्णता की चुनौतियाँ तथा शिक्षा, संवाद और समान अवसरों की भूमिका रखिए। अन्त में विविधताओं के सम्मान को भारत की शक्ति बताइए। निबन्ध में पत्र की तरह संबोधन या हस्ताक्षर नहीं लिखे जाते।

चरण 2: लगभग 300 शब्दों का आदर्श निबन्ध लिखिए **अनेकता में एकता : भारत की विशेषता**

भारत विविधताओं का विशाल देश है। यहाँ हिमालय की हिमाच्छादित चोटियाँ, उपजाऊ मैदान, विस्तृत मरुस्थल और समुद्री तट हैं। इसी प्रकार भाषा, वेशभूषा, भोजन, धर्म और रीति-रिवाजों में भी अनेक भेद दिखाई देते हैं। फिर भी भारतीयता की भावना हमें एक सूत्र में बाँधती है। अनेकता में एकता हमारी राष्ट्रीय पहचान की विशेषता है।

देश के विभिन्न प्रदेशों में अलग-अलग भाषाएँ बोली जाती हैं और अनेक त्योहार मनाए जाते हैं। ये भिन्नताएँ हमारे जीवन को समृद्ध बनाती हैं। संगीत, साहित्य, नृत्य तथा स्थापत्य में विभिन्न परम्पराओं का सुंदर संगम मिलता है। लोग एक-दूसरे के त्योहारों में भाग लेकर और सुख-दुःख बाँटकर आत्मीय संबंध बनाते हैं। इस प्रकार विविधता अलगाव का कारण बनने के बजाय सांस्कृतिक आदान-प्रदान का अवसर बनती है।

स्वतंत्रता संग्राम में अलग-अलग प्रान्तों और समुदायों के लोगों ने मिलकर संघर्ष किया। स्वतंत्र भारत का संविधान सभी नागरिकों को समानता और धार्मिक स्वतंत्रता का अधिकार देता है। राष्ट्रीय ध्वज, लोकतांत्रिक संस्थाएँ तथा देश की स्वतंत्रता के प्रति निष्ठा हमें जोड़ती हैं। बाढ़, भूकम्प या दूसरी विपत्तियों में देशभर से मिलने वाली सहायता इस एकता को व्यवहार में दिखाती है। खेलों में देश की सफलता भी सबको समान आनंद देती है।

फिर भी सांप्रदायिकता, जातिगत भेदभाव, भाषायी द्वेष और क्षेत्रीय संकीर्णता एकता को कमजोर करते हैं। इनसे बचने के लिए केवल भावनात्मक नारों से काम नहीं चलेगा। समान अवसर, न्यायपूर्ण व्यवहार और परस्पर संवाद आवश्यक हैं। विद्यालयों में विभिन्न संस्कृतियों की जानकारी दी जानी चाहिए। नागरिकों को अफवाहों से बचना, दूसरों की मान्यताओं का सम्मान करना और सार्वजनिक हित को महत्त्व देना चाहिए।

सच्ची एकता सबको एक जैसा बना देने में नहीं, बल्कि भिन्नताओं के साथ मिलकर रहने में है। जब प्रत्येक नागरिक स्वयं को समान सम्मान वाला भारतीय अनुभव करेगा, तभी राष्ट्रीय एकता और दृढ़ होगी। विविधताओं का संरक्षण करते हुए सहयोग और भाईचारे को बढ़ाना हम सबका कर्तव्य है। यही भारत की विशेषता और शक्ति है।

चरण 3: निष्कर्ष निबन्ध भारत की विविधता को साझा इतिहास, संवैधानिक मूल्यों और नागरिक सहयोग से जोड़ता है। इसका केंद्रीय संदेश है कि समान सम्मान और पारस्परिक सद्भाव से राष्ट्रीय एकता सुदृढ़ होती है।

त्वरित सुझाव: प्रत्येक विविधता के उदाहरण के बाद यह स्पष्ट कीजिए कि वह साझा भारतीय जीवन को कैसे समृद्ध करती है; केवल त्योहारों और भाषाओं की सूची मत बनाइए।

14(घ). निम्नलिखित विषयों में से किसी एक विषय पर लगभग 300 शब्दों में निबन्ध लिखिए :

पर्यावरण संरक्षण [10 अंक]

हल:

अवधारणा:

- पर्यावरण संबंधी निबन्ध में प्रकृति का महत्त्व, संकट के कारण, उसके प्रभाव और व्यावहारिक उपाय क्रम से प्रस्तुत किए जाते हैं।
- पर्यावरण संरक्षण का आशय प्राकृतिक संसाधनों का विवेकपूर्ण उपयोग, प्रदूषण में कमी और जीव-जगत की विविधता की रक्षा है। व्यक्तिगत प्रयासों के साथ सामूहिक उत्तरदायित्व भी आवश्यक है।

चरण 1: विषय का क्रम और प्रारूप निश्चित कीजिए शीर्षक के बाद भूमिका में पर्यावरण और जीवन का संबंध बताइए। विषय-विस्तार में वनों की कटाई, प्रदूषण और संसाधनों के अनुचित उपयोग से होने वाली हानि समझाइए। फिर सरकार, उद्योग, समाज और व्यक्ति के स्तर पर उपाय रखिए। उपसंहार में विकास को प्रकृति की सुरक्षा से जोड़िए। निबन्ध को स्पष्ट अनुच्छेदों में लिखिए और असत्यापित आँकड़े देने के स्थान पर सार्थक उदाहरण चुनिए।

चरण 2: लगभग 300 शब्दों का आदर्श निबन्ध लिखिए **पर्यावरण संरक्षण**

पर्यावरण हमारे चारों ओर उपस्थित वायु, जल, भूमि, वनस्पतियों और जीवों का समग्र संसार है। हमारा भोजन, स्वास्थ्य और जीवन इसी पर निर्भर है। मनुष्य प्रकृति से अलग नहीं, उसका एक अंग है। इसलिए पर्यावरण संरक्षण केवल सुंदर दृश्य बचाने का प्रयास नहीं, बल्कि वर्तमान और भावी पीढ़ियों के जीवन की रक्षा का संकल्प है।

बढ़ते उपभोग और अविवेकपूर्ण विकास ने प्राकृतिक संतुलन को प्रभावित किया है। वनों की कटाई से अनेक जीवों के आवास नष्ट होते हैं और मिट्टी का कटाव बढ़ता है। कारखानों तथा वाहनों से निकलने वाला धुआँ वायु को दूषित करता है। अनुपचारित मलजल और औद्योगिक अपशिष्ट नदियों को प्रदूषित करते हैं। प्लास्टिक का अनावश्यक उपयोग तथा कूड़े का अनुचित निपटान भी गंभीर समस्याएँ हैं। इनके कारण मनुष्य के साथ अन्य जीव भी संकट में पड़ते हैं।

संरक्षण के लिए विकास की दिशा बदलना आवश्यक है। उद्योगों को प्रदूषण नियंत्रण के नियमों का पालन करना चाहिए। नगरों में मलजल शोधन, कचरे का पृथक्करण और सुरक्षित निपटान सुनिश्चित हो। सार्वजनिक परिवहन को सुविधाजनक बनाने से निजी वाहनों पर निर्भरता घट सकती है। वर्षाजल संचयन, जलस्रोतों की सफाई और ऊर्जा की बचत को प्राथमिकता मिलनी चाहिए। वृक्ष लगाना उपयोगी है, पर उनकी नियमित देखभाल और मौजूदा वनों की सुरक्षा भी उतनी ही जरूरी है।

नागरिकों की भूमिका भी महत्त्वपूर्ण है। हम आवश्यकता भर पानी उपयोग करें, अनावश्यक बिजली बंद रखें और वस्तुओं का पुनः उपयोग करें। कपड़े के थैले अपनाना, कूड़ा खुले में न जलाना तथा स्थानीय स्वच्छता अभियानों में भाग लेना छोटे किंतु प्रभावी कदम हैं। विद्यालय पर्यावरण शिक्षा को पौधों की देखभाल और जल-संरक्षण जैसी गतिविधियों से जोड़ सकते हैं। जागरूक समाज नियमों के प्रभावी पालन की माँग भी करता है।

पर्यावरण की सुरक्षा और मानव की समृद्धि परस्पर विरोधी नहीं हैं। ऐसा विकास ही टिकाऊ है जो प्रकृति की सीमाओं का सम्मान करे। यदि सरकार, उद्योग और नागरिक मिलकर उत्तरदायित्व निभाएँ, तो स्वच्छ, स्वस्थ और संतुलित भविष्य संभव है।

चरण 3: निष्कर्ष पर्यावरण संरक्षण के लिए प्रदूषण रोकना, संसाधनों का विवेकपूर्ण उपयोग और जैव विविधता की रक्षा आवश्यक हैं। आदर्श निबन्ध व्यक्तिगत आचरण तथा संस्थागत प्रयासों, दोनों को टिकाऊ विकास से जोड़ता है।

त्वरित सुझाव: कारण बताने के बाद उससे जुड़ा उपाय अवश्य लिखिए: जल-प्रदूषण के साथ मलजल शोधन और वनों की कटाई के साथ संरक्षण तथा पौधों की देखभाल जोड़िए।

14(ङ). निम्नलिखित विषयों में से किसी एक विषय पर लगभग 300 शब्दों में निबन्ध लिखिए :

बढ़ती जनसंख्या : समस्या और समाधान [10 अंक]

हल:

अवधारणा:

- समस्यामूलक निबन्ध में विषय का परिचय, कारण, प्रभाव और समाधान के बीच स्पष्ट संबंध होना चाहिए। उपसंहार आशावादी हो, पर समस्या की गंभीरता को छिपाए नहीं।
- जनसंख्या और विकास का संबंध संसाधनों, शिक्षा, स्वास्थ्य तथा रोजगार से है। समाधान में जागरूकता, महिलाओं की समान भागीदारी और स्वैच्छिक परिवार-कल्याण को महत्त्व देना चाहिए।

चरण 1: कारण, प्रभाव और उपायों की रूपरेखा बनाइए शीर्षक के बाद भूमिका में जनसंख्या को मानव संसाधन और विकास की चुनौती, दोनों रूपों में देखिए। फिर अशिक्षा, कम उम्र में विवाह और स्वास्थ्य सेवाओं की कमी जैसे कारण बताइए। संसाधनों पर दबाव समझाने के बाद शिक्षा, स्वास्थ्य सुविधाओं, स्वैच्छिक परिवार-नियोजन और रोजगार से जुड़े उपाय प्रस्तुत कीजिए। अन्त में संख्या के साथ जीवन की गुणवत्ता सुधारने पर बल दीजिए। किसी समुदाय को समस्या का दोषी ठहराए बिना संतुलित भाषा में लिखिए।

चरण 2: लगभग 300 शब्दों का आदर्श निबन्ध लिखिए **बढ़ती जनसंख्या : समस्या और समाधान**

जनसंख्या किसी देश की शक्ति भी है और उसके विकास की बड़ी जिम्मेदारी भी। शिक्षित, स्वस्थ तथा कुशल नागरिक राष्ट्र की प्रगति में योगदान देते हैं। परन्तु जब जनसंख्या उपलब्ध संसाधनों और सुविधाओं की तुलना में तेजी से बढ़ती है, तब अनेक कठिनाइयाँ पैदा होती हैं। इसलिए प्रश्न केवल लोगों की संख्या का नहीं, सबको सम्मानजनक जीवन देने का है।

जनसंख्या वृद्धि के पीछे कई सामाजिक और आर्थिक कारण हैं। अशिक्षा, कम उम्र में विवाह, पुत्र-प्राप्ति की इच्छा और परिवार-नियोजन संबंधी जानकारी का अभाव इसमें भूमिका निभाते हैं। जहाँ स्वास्थ्य सेवाएँ पर्याप्त नहीं हैं, वहाँ दम्पतियों को उचित परामर्श और साधन नहीं मिल पाते। महिलाओं की शिक्षा तथा निर्णय लेने की स्वतंत्रता की कमी भी परिवार के आकार को प्रभावित करती है। इन कारणों को समझे बिना स्थायी समाधान संभव नहीं है।

बढ़ती जनसंख्या से विद्यालयों, अस्पतालों, आवासों और परिवहन पर दबाव बढ़ता है। रोजगार के अवसर पर्याप्त न हों तो बेरोजगारी और गरीबी की समस्या गंभीर होती है। नगरों में भीड़, गंदी बस्तियाँ तथा स्वच्छ पानी की कमी दिखाई देती है। भूमि, जल और ऊर्जा की बढ़ती माँग पर्यावरण को भी प्रभावित करती है। हालांकि इन समस्याओं के लिए असमान वितरण और कमजोर प्रशासन भी जिम्मेदार हैं; केवल जनसंख्या को दोष देना उचित नहीं।

समाधान के लिए सबको गुणवत्तापूर्ण शिक्षा और सुलभ स्वास्थ्य सेवाएँ मिलनी चाहिए। विशेष रूप से लड़कियों की शिक्षा, बाल-विवाह की रोकथाम और महिलाओं की आर्थिक स्वतंत्रता आवश्यक है। दम्पतियों को परिवार-नियोजन का सही परामर्श तथा साधन स्वेच्छा से उपलब्ध कराए जाएँ। स्वस्थ छोटे परिवार के लाभ समझाए जाएँ, लेकिन किसी पर दबाव न डाला जाए। ग्रामीण विकास, कौशल-प्रशिक्षण और रोजगार के अवसर भी जीवन की सुरक्षा बढ़ाते हैं।

जनसंख्या संबंधी नीति का उद्देश्य मनुष्य को बोझ मानना नहीं, उसकी क्षमताओं का विकास करना होना चाहिए। शिक्षा, समानता, जागरूकता और जिम्मेदार नियोजन से जनसंख्या वृद्धि संतुलित हो सकती है। तभी अधिक नागरिक देश की चुनौती बनने के बजाय उसकी शक्ति बनेंगे।

चरण 3: निष्कर्ष जनसंख्या की चुनौती का समाधान शिक्षा, स्वास्थ्य, समान अवसर और स्वैच्छिक परिवार-कल्याण के संयुक्त प्रयासों में है। निबन्ध संख्या के संतुलन के साथ प्रत्येक नागरिक के जीवन की गुणवत्ता सुधारने का संदेश देता है।

त्वरित सुझाव: समस्या और समाधान को जोड़े में सोचिए: अशिक्षा के लिए शिक्षा, बाल-विवाह के लिए जागरूकता और रोकथाम, तथा सेवाओं की कमी के लिए सुलभ स्वास्थ्य सुविधाएँ लिखिए।